संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित
ऋषि प्रसाद
हिन्दी
मूल्य : रु. ६/-
अंक : १६७
नवम्बर ०६
गीता
गीता जयंती
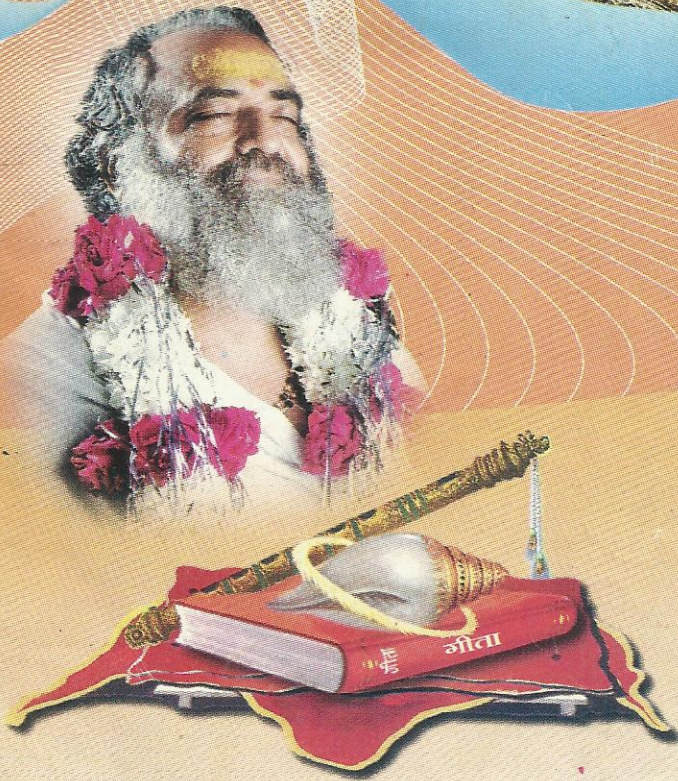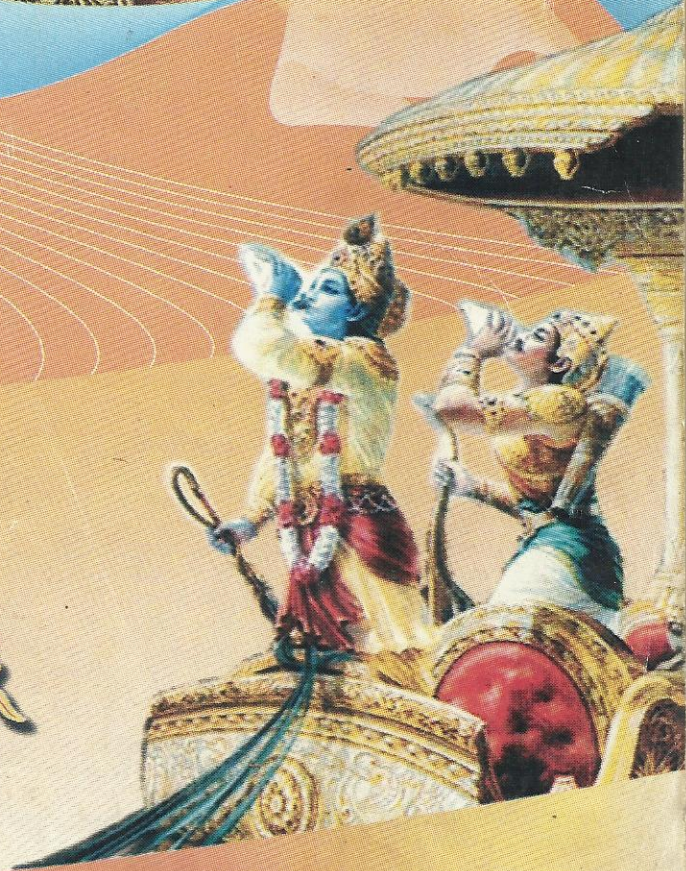
पितरों के प्रति कृतज्ञताज्ञापन का पर्व : श्राद्ध
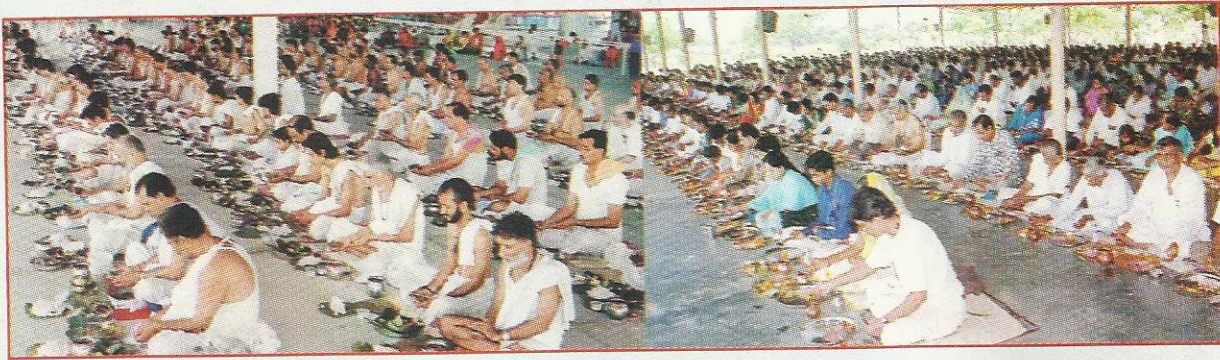
जम्मू आश्रम (जम्मू-कश्मीर) बड़ौदा आश्रम (गुज.)

नासिक आश्रम (महा.) भैरवी आश्रम, जि. नवसारी (गुज.)

बदलापुर आश्रम, जि. थाने (महा.) सूरत आश्रम (गुज.)

सामूहिक जप करते हुए अमदावाद (गुज.) एवं छिन्दवाड़ा (म.प्र.) गुरुकुलों के बच्चे ।

वर्ष : १७ अंक : १६७ नवम्बर २००६ कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं. २०६३ मूल्य : रु. ६/-

ऋषि प्रसाद

इस अंक में

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई वाणी
प्रकाशन स्थल : श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-५.
मुद्रण स्थल : दिव्य भास्कर, भास्कर हाऊस, मकरबा, सरखेज-गांधीनगर हाईवे, अहमदाबाद - ३८००५१
सम्पादक : श्री कौशिकभाई वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा
श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ५५/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २००/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में

(१) वार्षिक : रु. ८०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १५०/-
(३) पंचवार्षिक : रु. ३००/-
(४) आजीवन : रु. ७५०/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80
(४) आजीवन : US $ 200

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	१२०	५००
नेपाल, भूटान व पाक में	१७५	७५०
अन्य देशों में	US$20	US$80

कार्यालय : 'ऋषि प्रसाद', श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-५.
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक अथवा सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें ।

भगवान की सृष्टि में न्याय ही होता है

● बापूजी के सत्संग-प्रवचन से

देवता की जितनी कुछ तपस्या-सेवा करोगे उतना ही देगा, दुकानदार को जितना पैसा दोगे उतना माल देगा, फिर उससे तुम्हारा हित हो, अहित हो तुम जानो लेकिन भगवान, सद्गुरु तो तुम्हें वही देंगे, वही करेंगे जिसमें तुम्हारा हित हो । दुकान पर बच्चा पचास या सौ रुपये का नोट ले गया और उँगली से इशारा करते हुए माँगा - ऊँह... ऊँह... (रानी छाप, लक्ष्मी छाप पटाखे), ऊँह... (लाल मिर्च), ऊँह... (सफेद सोडा), तो दुकानवाला होगा तो ५०-१०० रुपये लेकर उसको तीनों चीजें दे देगा । लेकिन वही दुकानदार उस बच्चे का बाप हो तो पैसा ले लेगा और एक भी चीज नहीं देगा, ऊपर से थप्पड़ मारेगा कि बेवकूफ कहीं का ! ...तो लगेगा कि अन्याय है । लेकिन वह बाप है, बेटे से अन्याय न हो इसलिए थप्पड़ मारने का न्याय करता है । ऐसे ही देवता से तुम जो माँगो वह दे देगा लेकिन गुरु और भगवान से जो माँगो वे नहीं देंगे, जिसमें आपका हित हो वही करेंगे और वही देंगे । तो कहाँ हुआ अन्याय ? क्या माँ की ताकत है कि बेटों से अन्याय करेगी ? बाप की ताकत है कि अपने बच्चों से अन्याय करे ? अरे ! बाप और माँ से भी हजार गुना कोमल हृदय है प्रकृति माता का और परमात्मा का । वे अन्याय क्यों करेंगे ? परमात्मा तो परम हितैषी है, परम दयालु है ।

सुहृदं सर्वभूतानाम् । (गीता : ५.२९)

भगवान की ताकत नहीं कि आपके साथ अन्याय करे, कुदरत की ताकत नहीं कि आपके साथ अन्याय करे । आप सोचने-विचारने और कर्म करने की बेवकूफी का अन्याय अपने साथ न करो, बस ।

भगवान की सृष्टि में सबकी भलाई होती है । भगवान जो करते हैं भले के लिए करते हैं, अच्छे के लिए करते हैं । जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा है, जो होगा वह भी अच्छा होगा । हम अपने साथ अन्याय न करें । न भगवान अन्याय करते हैं, न माया अन्याय करती है, न कोई देवी-देवता अन्याय करता है, न कोई विरोधी हमारे साथ अन्याय करता है ।

काहु न कोऊ सुख-दुःख कर दाता ।
निज कृत करम भोग सबु भ्राता ॥
(रामचरित. अयोध्या. : ९१.२)

स्वामी रामसुखदासजी महाराज की किसी ईसाई पादरी से भेंट हो गयी। वह ईसाइयत का गुणगान करने लगा तो रामसुखदासजी महाराज ने कहा : ''आपके ईसाई धर्म में बड़े-से-बड़ी जो बात है वह मुझे कहो और मैं आपको उससे ऊँचा हिन्दू धर्म का सिद्धांत सुना दूँगा।''

पादरी ने कहा : ''बड़े-में-बड़ी बात यह है कि जीसस क्राईस्ट को जब क्रॉस पर चढ़ाया जा रहा था तो उन्होंने कहा : गॉड ! इनको सद्बुद्धि दो। भगवान ! इनको सद्बुद्धि दो।''

रामसुखदासजी महाराज ने कहा : ''गुजरात में एक महात्मा थे। वे एकांत में भजन करते थे। किसी राजा के राजमंत्री के घर अच्छी-खासी चोरी हुई। चोर माल लेकर

भागे तो घोड़ों के खुरों के निशानों का सहारा लेते-लेते सिपाही चोरों का पीछा करने लगे। दूर से घोड़ों की टाप सुनायी पड़ी तो चोरों को पता चल गया कि हमारा पीछा हो रहा है। चोर अपना सामान उन महात्मा के आश्रम के इर्द-गिर्द छोड़कर नौ-दो ग्यारह हो गये। सिपाही वहाँ पहुँचे तो देखा कि यही माल है तो सोचा, 'चोर यहीं ठहरे थे और यह चोरों का सरदार साधु का वेष बनाकर बैठ गया है।'

उन सिपाहियों ने साधु को खूब सुनायी और हथकड़ियाँ डाल दीं। साधु को राजा द्वारा सजा तक सुनायी गयी पर साधु ने यह नहीं कहा कि 'भगवान! राजा को सद्बुद्धि दो। सिपाहियों को सद्बुद्धि दो।' जीसस तो कहते हैं: 'मेरे को सजा देनेवालों को सद्बुद्धि दो।' परंतु साधु ने ऐसा नहीं कहा। साधु ने कहा : **'हरि ! तुं बधुं जाणे छे...** भगवान! तुम सब जानते हो - चोर कौन है, साहूकार कौन है ? फिर भी मुझे हथकड़ियाँ पड़ीं और जेल जाना पड़ता है तो यह मेरे किसी-न-किसी कर्म का फल भुगताकर मुझे शुद्ध कर रहे हो। तुम कितने शुद्धिदाता हो!'

देखो, जीसस की समझ और गुजरात के हमारे एक संत की समझ!''

प्रभु की दुनिया में अन्याय होता है यह कहना ही अन्याय है। जब भी कोई दुःख मिलता है तो हम सोचते हैं: 'यह जुल्म हो गया, अन्याय हो गया। परमात्मा के राज में यह अनर्थ कैसा, अन्याय कैसा ?' मगर वास्तविकता यह है कि हम उसे पहचानने में भूल करते हैं।

सदना नाम के एक भक्त पैदल जगन्नाथपुरी जा रहे थे। रात्रि को वे किसी गाँव में एक गृहस्थ के घर सो गये। मध्यरात्रि में घर की युवती महिला उठी और सदना के पास आकर अनेक प्रकार की कुचेष्टाएँ करने लगी।

सदना: ''माता! यह क्या करती हो?''

युवती को लगा कि मेरे पति के भय से ही यह मेरी बात नहीं मानता। उसने म्यान में से तलवार निकालकर अपने सोये हुए पति का सिर धड़ से अलग कर दिया व सदना से बोली: ''देख, तेरा डर मैंने निकाल दिया। अब मुझे स्वीकार कर।''

सदना: ''माता! यह मेरे से नहीं होगा।''

''अगर तूने मेरी बात नहीं मानी तो मैं अभी तेरी खबर ले लूँगी।''

''यह बात तो मैं मान ही नहीं सकता हूँ।''

''तो देख ले मजा!'' यह कहकर महिला ने अपने कपड़े फाड़ लिये, खून से रँगी हुई तलवार प्रांगण में फेंक दी। दरवाजे पर सिर पटका और जोर-जोर से रोने लगी: ''मैं तो मर गयी रे... मेरा तो सब लुट गया रे...''

उसकी आवाज़ सुनकर लोग इकट्ठे हो गये और पूछने लगे: ''क्या हुआ?''

महिला : ''मैं तो लुट गयी रे... इस यात्री को खिलाया-पिलाया, घर में रखा और इसने रात्रि को मेरे पति का सिर काट दिया। अब मेरी इज्जत लूटने को आ रहा है, मुझे बचाओ।''

सदना को किसीने जूते से तो किसीने लकड़ी से मारा। सदना पर मुकदमा चला और निर्णय सुनाया गया: 'इसने हाथों से तलवार उठायी है एवं पाप किया है तो इसके दोनों हाथ काट दो।'

सदना के दोनों हाथ काट दिये गये। सदना कीर्तन एवं प्रार्थना करते हुए चल पड़े। जगन्नाथजी ने अपने पुजारी के स्वप्न में आकर कहा: 'मेरा प्रिय भक्त आ रहा है, उसके दोनों हाथ कटे हुए हैं। जल्दी जाओ और यहाँ लाकर उसकी सेवा करो।'

पुजारी पालकी लेकर गये और सदना का आदर-सत्कार करके उसमें बैठाकर ले आये। सदना ने भगवान
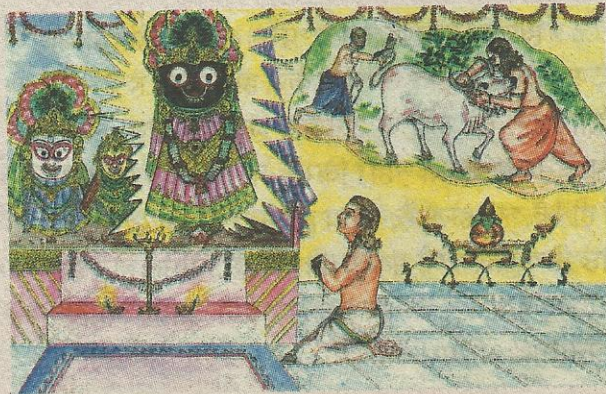
जगन्नाथजी को दंडवत् प्रणाम किया व भुजाएँ उठाकर भाव-विभोर हो जैसे ही कीर्तन करना शुरू किया, उनके दोनों हाथ पूर्ववत् ठीक हो गये । प्रभुकृपा से हाथ ठीक तो हुए पर मन में शंका बनी रही कि वे क्यों काटे गये थे ?

रात्रि को स्वप्न में सदना को प्रभु के दर्शन हुए । सदना बोले : ''प्रभु ! मैंने क्या गुनाह किया कि मेरे हाथ कटवा दिये ? तुम्हारे राज्य में इतना अन्याय ?''

भगवान ने उन्हें बताया : ''तुम पिछले जन्म में काशी के एकांत जंगल में झोपड़ी बनाकर जप-तप करते थे । एक कसाई गाय को काटने के लिए उसका पीछा कर रहा था और तुमने उस गाय को अपने दोनों हाथों से पकड़कर रोक लिया था । उस गाय को कसाई ले गया एवं उसका गला काट दिया । वही गाय इस जन्म में कसाई की पत्नी बनी और उसने अपने पति की गर्दन काट दी । तूने दोनों हाथों को गाय के गले में डालकर उसे रोका था, इसी पाप से इस जन्म में तुम्हारे दोनों हाथ कट गये और इस दंड से तुम्हारे पाप का नाश हो गया। यह कर्म का सिद्धान्त है, मैंने अन्याय नहीं किया । **गहना कर्मणो गतिः**। कर्म की गति बड़ी गहन है ।''

यह सुनकर सदना का हृदय भर उठा कि 'भगवन् ! क्या सुंदर व्यवस्था है ! बाहर से दिखता है कि दुःख है, कष्ट है लेकिन वह कष्ट प्रारब्ध का है । 'तुम्हारी सृष्टि में अन्याय होता है', ऐसा कहना भी गलती है ।'

ईश्वर सभीका हितैषी है, परम सुहृद है, अंतर्यामी है, सर्वसमर्थ है फिर अन्याय कैसे हो सकता है ? नहीं होता। कर्म की गति के अनुसार किसका, क्या लेन-देन है - हम जानते नहीं। किसी-न-किसी ऋणानुबंध से ही जो कुछ होता है, न्याय ही होता है। आपदाओं के पीछे छिपे कारण भी मनुष्य की ओर से निर्मित होते हैं। इसलिए इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि हम अपने साथ अन्याय न करें।

व्यासजी की कृपा-प्रसादी

• बापूजी के सत्संग-प्रवचन से

भगवान वेदव्यासजी ने एक लाख श्लोकोंवाला महाभारतरूपी पंचम वेद रचा। उसमें भीष्म पर्व है, उसमें से 'गीता' निकली है। 'गीता' में १८ अध्याय हैं, ७०० श्लोक हैं, ९४५६ शब्द हैं । उसका एक शब्द काटकर श्रीधर स्वामी ने **'योगक्षेमं वहाम्यहम्'** में **'वहाम्यहम्'** की जगह पर **'ददाम्यहम्'** लिखा तो नन्हे-मुन्ने श्रीकृष्ण प्रकट हो गये थे और श्रीधर स्वामी को अपनी गलती का पता चला। कैसी है यह महाभारत से निकली 'गीता' ! गीताकार स्वयं प्रकट हो जाते हैं! महापुरुष वेदव्यासजी ने मानव-जाति को जो दिया है, उसके लिए मानव-जाति उन सत्पुरुष की सदा के लिए ऋणी है । ऐसे भगवान व्यासजी को बार-बार प्रणाम हैं।

अगर वेदव्यासजी की कृपा नहीं होती तो 'गीता' नहीं बन सकती थी। वेदव्यासजी की कृपा नहीं होती तो 'गुरु ग्रंथसाहिब' नहीं बन सकता था। वेदव्यासजी की कृपा नहीं होती तो आसुमल से संत श्री आसारामजी नहीं बन सकते थे। वेदव्यासजी की कृपा नहीं होती तो तुम इतने तपस्वी, संयमी नहीं हो सकते और शांति से नहीं बैठ सकते थे।

'गीता' की शरण लेकर गाँधीजी ने अंग्रेजों को भगाया। अगर वेदव्यासजी की कृपा नहीं होती तो गाँधीजी भारत को आजाद भी नहीं करा सकते थे। आपकी आजादी के पीछे भी व्यासजी की कृपा-प्रसादी 'भगवद्गीता' का सीधा हाथ है।

स्वतंत्रता सेनानियों को जब फाँसी की सजा दी जाती थी, तब 'गीता' के श्लोक बोलते हुए वे हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ जाते थे।

अंग्रेजों ने कहा कि 'भारतवासी आजादी चाहते हैं । उनका दमन करो । पकड़-पकड़ के ५-१० को फाँसी के तख्त पर लटका दो, अपने-आप चुप हो जायेंगे।'

फिर अंग्रेजों ने पूछा : 'अभी ये दबे कि नहीं दबे ?

'गीता' का स्वतंत्रता-संग्राम में योगदान

फाँसी पर लटकने से दूसरे भाग गये कि नहीं भागे ?'

'अरे ! वे तो और भी शेर बन गये। चीते भी शेर बन गये ! हिरण भी शेर बन गये ! इनके यहाँ तो...'

'क्या बात है ?'

'गीता सुनकर कई हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ जाते हैं। गीता का ज्ञान है इनके पास :

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

इस आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, इसको आग जला नहीं सकती, इसको जल गला नहीं सकता और वायु सुखा नहीं सकती।'

(गीता : २.२३)

इस गीताज्ञान को पाकर स्वतंत्रता सेनानी कहते हैं : 'हम भारतमाता को आजाद करा देंगे। अस्त्र-शस्त्र से मरे वह मैं नहीं हूँ। शरीर मरनेवाला है, मैं अमर आत्मा हूँ। ॐ ॐ ॐ... विट्ठल-विट्ठल-विट्ठल... हरि-हरि...' इस प्रकार भगवान के नाम का गुंजन करते-करते फाँसी को गले लगा के जब ये शहीद हो जाते हैं तो दूसरे तैयार हो जाते हैं। एक जाता है तो उस इलाके में बीसों बहादुर खड़े हो जाते हैं।'

अंग्रेजों ने कहा : 'गीता के ज्ञान में ऐसा है तो गीता पर बंदिश लगा दो और गीता का ज्ञान जिसने बोला है उसको जेल में डाल दो।'

स्वतंत्रता सेनानियों को जब फाँसी की सजा दी जाती थी, तब 'गीता' के श्लोक बोलते हुए वे हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ जाते थे।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि
नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न
शोषयति मारुतः॥

गीताकार श्रीकृष्ण को अंग्रेज कहाँ से जेल में डालेंगे ? और गीता पर बंदिश आते ही गीता का और प्रचार हुआ। देशवासियों का हौसला बुलंद हुआ।

पूरे देश पर कृपा है वेदव्यासजी की कि उन्होंने 'गीता' जैसा ग्रंथरत्न हमें प्रदान किया, जिसने देश को स्वतंत्र बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। देशवासी व्यास भगवान को नहीं मानते हैं तो गुणचोर हैं, बेईमान हैं; अगर कृतज्ञता है तो प्रणाम करना चाहिए व्यास भगवान को।

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे
फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र।
येन त्वया भारततैलपूर्णः
प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः॥

'प्रफुल्ल कमलदल के समान बड़े-बड़े नेत्रों तथा विशालबुद्धिवाले व्यासजी ! आपको नमस्कार है। आपने (जगत को प्रकाश देने के लिए) महाभारतरूपी तेल से भरे हुए ज्ञानरूपी दीपक को प्रज्वलित किया है।'

(ब्रह्मपुराण : २४५.११)

युग-युग में व्यासजी अवतार लेते हैं। ऐसे जो भी व्यास धरती पर हों अथवा अपनी महिमा में कहीं हों, जो भी ब्रह्मज्ञानी महापुरुष हैं, व्यास भगवान हैं उनको हम लोग फिर से प्रणाम करते हैं। हे महापुरुषो ! हम आपके ऋणी हैं।

भगवद्गीता ऐसे दिव्य ज्ञान से भरपूर है कि उसके अमृतपान से मनुष्य के जीवन में साहस, हिम्मत, समता, सहजता, स्नेह, शान्ति और धर्म आदि दैवी गुण विकसित हो उठते हैं, अधर्म और शोषण का मुकाबला करने का सामर्थ्य आ जाता है। अतः प्रत्येक युवक-युवती को गीता के श्लोक कण्ठस्थ करने चाहिए और उनके अर्थ में गोता लगाकर अपने जीवन को तेजस्वी-ओजस्वी बनाना चाहिए।

- पूज्य बापूजी

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ।।

'हे अर्जुन ! तू पहले इन्द्रियों को वश में करके इस ज्ञान और विज्ञान का नाश करनेवाले महान पापी काम (वासना) को अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल।'
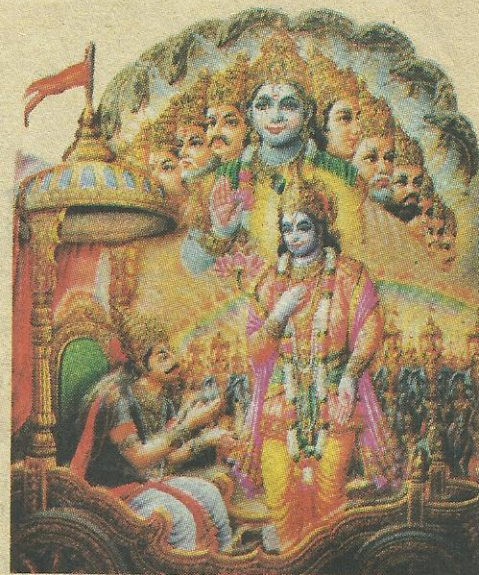
विवेक का दिव्य बीज प्रकटाओ

• बापूजी के सत्संग-प्रवचन से

सुख की माँग जीवमात्र की है और तुम जीवात्मा हो। सुख के लिए कीड़ी-मकोड़ी, मच्छर, खटमल जैसे प्राणी भी प्रयत्न करते हैं, तुम प्रयत्न करो इसमें कोई अपराध नहीं है। तुम्हारे पास सुविधाएँ हो सकती हैं। सुविधाएँ सुख के लिए ही जुटायी जाती हैं लेकिन सुख कुछ और ही चीज है। इस सुख को आच्छादित करनेवाली कौन-सी गलती है, क्या कारण है ?

जो देवता नहीं कर सकते, वह मनुष्य कर सकता है।

मनुष्यैः क्रियते यत्तु तन्न शक्यं सुरासुरैः ।

(ब्रह्म पुराण : २७.७०)

मनुष्य जो (श्रेष्ठतम कार्य) कर सकता है, जिस ऊँचाई को पा सकता है वह सुर और असुरों के लिए भी संभव नहीं है। इतनी ऊँचाइयाँ पाने की योग्यताएँ हैं मनुष्य में और आज मनुष्य सब कुछ करते हुए भी दुःखों से अपनेको खाली नहीं मानता; रोगों से, बीमारियों से, पीड़ाओं से अपनेको आजाद नहीं करा रहा है। क्या बात है ? कहाँ गलती है ?

भगवान श्रीकृष्ण ने 'गीता' के तीसरे अध्याय के इकतालीसवें श्लोक में तुम्हारी योग्यताओं को ढकनेवाली गलती का वर्णन किया है :

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ।।

'हे अर्जुन ! तू पहले इन्द्रियों को वश में करके इस ज्ञान और विज्ञान का नाश करनेवाले महान पापी काम (वासना) को अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल।'

भगवान तुम्हारी महानता जानते हैं। इतनी महानता जानते हैं कि भगवान कहते हैं, 'जो मैं हूँ वह तुम हो।' तुम्हारी महानता तुम्हारा बाप नहीं जानता, माँ नहीं जानती, मित्र नहीं जानता । या तो भगवान को पाये हुए ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु तुम्हारी महानता जानते हैं या भगवान स्वयं जानते हैं। उनके सिवाय तुम्हारी महानता कोई जान ही नहीं सकता। हाँ, वेद भगवान तुम्हारी महानता का बखान करते हैं।

तुम्हारी महानता क्या है ? पता है ? कभी न मिट सको, कभी न मर सको वह तुम अमर आत्मा, परमेश्वर, ब्रह्म का सनातन, सत्य स्वरूप हो- यह तुम्हारी महानता है । फिर भी तुम दुःखी हो और मिट रहे हो, मर रहे हो- ऐसा तुमको दिखता है। दिखता है फिर भी गहराई से तुम मरना-मिटना नहीं चाहते । शरीर मर जाय फिर भी उसका नाम ठोकना चाहते हो । मियाँ पड़े किंतु टँगड़ी

ऊँची दिखाते- यह बात तुम्हारी अंदर की महानता की खबर दे रही है । तुम्हारे अंदर चौरासी लाख जीवों की अपेक्षा एक विशेषता है । इस महानता को पहचानने के लिए वह विशेषता मिली है । क्या विशेषता है ?

मनुष्य में एक दिव्य योग्यता का बीज पड़ा है कि मनुष्य के पास विवेक है। और जीवों में विवेक है खान-पान व शरीर को सँभालने तक का परंतु मनुष्य के जीवन में विवेक का इतना ऊँचा बीज पड़ा है कि उसको विकसित करके वह भगवत्तत्त्व को पा सकता है । 'भगवान जिससे भगवान हैं वही मेरा ब्रह्मस्वभाव है' - यहाँ तक पहुँच सकता है।

विवेक दो प्रकार का है - सामान्य विवेक और विशेष विवेक । 'क्या खाना, क्या न खाना ? दुःख से भाग के किधर सुखी होना ?' - यह सामान्य विवेक तुच्छ कीड़े-मकोड़े, खटमल, कुत्ते आदि में भी है लेकिन तुम्हारे में विशेष विवेक है कि तुम परिणाम का विचार कर सकते हो कि 'ऐसा करेंगे तो फिर क्या होगा ?' कुत्ता जिस किसी पर भौंक देगा। तुम जिस किसीके साथ नहीं झगड़ोगे, परिणाम को विचारोगे। जैसी विवेकशक्ति भगवान ने मनुष्य को दी है ऐसी किसीके पास नहीं है।

गाय कभी मुकदमा नहीं लड़ती, पत्थर कभी चोरी नहीं करता, पेड़ कभी झूठ नहीं बोलते, पक्षी कभी जमानत नहीं माँगते किंतु मनुष्य जमानत भी माँगता है, अदालत में मुकदमा भी करता है, झूठ भी बोलता है, चोरी भी करता है, व्यभिचार भी करता है, कत्ल भी करता है। इन सारे दोषों के बावजूद भी मनुष्य श्रेष्ठ है क्योंकि भगवान ने उसे विवेक का खजाना दे के भेजा है। वह विवेक सुषुप्त है, इसलिए वासना मनुष्य को दबाये रखती है। अगर वह सुषुप्त विवेक जग जाय तो सोया वैराग्य उठ बैठेगा, फिर व्यक्ति वासनाओं को बिखेरते-बिखेरते निर्वासनिक नारायण तक पहुँच जायेगा और पूजा जायेगा।

गलतियाँ कब होती हैं ? जब वासना जोर मारती है और वासना तब तक जोर मारती है जब तक प्रभु-प्राप्ति की लगन नहीं लगती। प्रभु-प्राप्ति की लगन लगी तो तुम सत्संग में पहुँचोगे और सत्संग में विवेक जागृत हो जाता है ।

बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।।

सत्संग के बिना विवेक तीव्र नहीं होता, जागृत नहीं होता। विवेक जगने पर तुम मजा लेने के लिए नहीं अपितु वासना के प्रभाव से बचकर खाओगे । संतान को पैदा करोगे, शादी-विवाह करोगे, गहने-गाँठे पहनोगे लेकिन 'गहने-गाँठों से मैं बड़ा हो गया, शादी से मैं श्रेष्ठ हो गया अथवा धन-दौलत से मैं बड़ा हो गया' - यह बेवकूफी विवेक टिकने नहीं देगा।

तुम अपना मूल्य घटाते हो तभी धन-दौलत, सत्ता से अपनेको बड़ा मानते हो। वास्तव में ये नहीं थे तब भी तुम थे, ये नहीं रहेंगे तब भी तुम रहोगे। तुम्हारे कारण ये हैं इनके कारण तुम नहीं । तुम चेतन हो और ये चीजें जड़ हैं । चेतन जड़ की गुलामी करे यह विवेक का अनादर है।

मनुष्य के पास भगवद्-दत्त जो विवेक है कि सच्चा सुख कहाँ है- उस विवेक का अनादर करने से पाशवीय सुख के पीछे वह न करने जैसे कर्म करके पशुओं से भी ज्यादा दुःखी हो जाता है । तुम किसी वस्तु को, व्यक्ति को, भोग को पाकर सुखी होने की जो गलती करते हो वह वासना का प्रभाव है पर ज्यों-ज्यों विवेक प्रभावशाली होता है और वासना दुर्बल होती है, त्यों-त्यों तुम्हारी वास्तविक महानता में निखार आता है ।

वास्तविक महानता में निखार जिन्होंने ला दिया वे 'महावीर' होकर पूजे जाते हैं। राजसत्ता को छोड़कर सिद्धार्थ ने वास्तविक विवेक का विकास किया और 'महात्मा बुद्ध' होकर पूजे जाते हैं। मनुष्य के पास जन्मजात वास्तविक विवेक है, जो सुषुप्त पड़ा रहता है। मेरे गुरुदेव 'साँईं लीलाशाह' होकर सम्मानित होते हैं, पूजे जाते हैं। 'सत् क्या है, असत् क्या है ? मैं क्या हूँ और मेरा क्या है ?' - यह विवेक मनुष्य कर सकता है। 'सुख आता है चला जाता है, दुःख आता है चला जाता

है परंतु उनको जाननेवाला रहता है' - यह ज्ञान मनुष्य पा सकता है।

जितना-जितना विवेक जागेगा उतना-उतना तुम निर्वासनिक होगे, उतने ही तुम निर्भीक होगे, उतना ही तुम्हारे सामर्थ्य का सदुपयोग होगा।

अरे ! तुम्हारे में अनंत-अनंत योग्यताओं का ऐसा भंडार भरा है कि सारी सृष्टि बीजरूप में तुम्हारे में छिपी है और तुमने उसका लाखवाँ हिस्सा मुश्किल से विकसित किया है । बाकी निन्यानवें हजार नौ सौ निन्यानवें हिस्से दबे पड़े हैं। उन्हें दबानेवाली अभागी वासना है और जगानेवाला सत्संग तथा भगवत्साधना है।

यह वासना मिटाने की मैं तुमको साधना बताऊँगा । उससे यह वासना निगुरी भाग जायेगी, तुम्हारी इन्द्रियों का विषयों के प्रति आकर्षण कम हो जायेगा, मन की चंचलता कम हो जायेगी, एकाग्रता आयेगी । एकाग्रता आने से सारे क्षेत्रों में सफलता आयेगी। बुद्धि के विकास से विवेक का विकास होगा, बिल्कुल होगा ! विवेक धन से बड़ा है, सत्ता से बड़ा है, स्वर्ग से बड़ा है । १०० दिन का अनुष्ठान करो या ४० दिन का अनुष्ठान करो - प्रतिदिन २० मिनट सुबह, २० मिनट शाम यह प्रयोग करना :

सद्गुरु का चित्र, भगवान का चित्र आँखों की सीध में रखो । जिनकी उम्र ४५ साल से ज्यादा है वे दोनों हाथों की उँगलियाँ मिला दें और हाथ गोद में रखें, ताकि बुढ़ापे की कमजोरी रुके। (चित्र देखें)· अन्य लोग ज्ञानमुद्रा में बैठें। अब प्राणायाम करो और फिर लम्बा श्वास लेकर **ओऽऽऽम्.... ओऽऽऽम्....** इस प्रकार प्रणव का दीर्घ उच्चारण करते हुए भगवान को, गुरु को प्रेम से देखते जाओ और फिर शांत होते हुए इसीका जप करते जाओ । २० मिनट करो। कुछ ही दिनों में आनंद, शांति और उनके अनुभव के तरंग तुम पर बरसना चालू करेंगे और रात को सपने में बापू के साथ भी बातचीत कर सकोगे।

क्या करना, क्या न करना ? क्या लेना, क्या न लेना ? क्या खाना, क्या न खाना ?- यह बापू से फोन करके नहीं पूछ सकते परंतु अंदर का सैटेलाइट जोड़ के बापू से और बापू के बापू - आत्मदेव से पूछ सकते हैं । सीधा संबंध ईश्वर के साथ... १०० दिन का अनुष्ठान करो तो मुझे बहुत खुशी होगी, नहीं तो ४० दिन करके देखो। मैं तो कहूँगा - जो करेंगे, मैं मानूँगा वे मेरे पक्के शिष्य हैं।

यह जरूर करो तो मैं जीते-जी देखूँ कि मेरा शिष्य और चमका है। लोगों को चमक दिखे पर अपनेको तो ईश्वर दिखे।

कृत-अकृत उपासक

बाहर के रस में जीवन न गँवाकर भीतर के रस को पाने की इच्छा करनेवाले व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं :

१) कृत उपासक २) अकृत उपासक

कृत उपासक अर्थात् जिन्होंने उपासना की है । धर्म-कर्म करके, दान-पुण्य-सेवा-परोपकार आदि करके जिन्होंने अपने हृदय को सुयोग्य बनाया है, ऐसे व्यक्तियों को तत्त्वज्ञान की थोड़ी-सी बात सुनकर ही आत्मविश्रांति मिल जाती है, प्रभु का दर्शन, प्रभुतत्त्व का अनुभव हो जाता है ।

दूसरे वे व्यक्ति होते हैं जिन्होंने उपासना नहीं की है । ऐसे लोग यदि आत्मज्ञान की बातें सुनते हैं तो उन्हें आत्मसाक्षात्कार तो नहीं होता किंतु सुनते-सुनते उनके कल्मष (पाप-ताप-दोष-कुसंस्कार) मिटने लगते हैं और धीरे-धीरे उनका हृदय तत्त्वज्ञान के योग्य बन जाता है ।

नौ योगीश्वरों के उपदेश

(अंक १६५ से आगे)

राजन् ! जो पुरुष चाहता है कि शीघ्र-से-शीघ्र मेरे ब्रह्मस्वरूप आत्मा की हृदय-ग्रन्थि - मैं और मेरे की कल्पित गाँठ खुल जाय, उसे चाहिए कि वह वैदिक और तान्त्रिक दोनों ही पद्धतियों से भगवान की आराधना करे। पहले सेवा आदि के द्वारा गुरुदेव की दीक्षा प्राप्त.करे, फिर उनके द्वारा अनुष्ठान की विधि सीखे; अपनेको भगवान की जो मूर्ति प्रिय लगे, अभीष्ट जान पड़े, उसीके द्वारा पुरुषोत्तम भगवान की पूजा करे। पहले स्नानादि से शरीर और सन्तोष आदि से अन्तःकरण को शुद्ध करे, इसके बाद भगवान की मूर्ति के सामने बैठकर प्राणायाम आदि के द्वारा भूतशुद्धि - नाड़ी-शोधन करे, तत्पश्चात् विधिपूर्वक मन्त्र, देवता आदि के न्यास से अंगरक्षा करके भगवान की पूजा करे। पहले पुष्प आदि पदार्थों से जन्तु आदि निकालकर, पृथ्वी को सम्मार्जन आदि से, स्वयं अव्यग्र होकर और भगवान की मूर्ति को पहले की पूजा के लगे हुए पदार्थों के क्षालन आदि से पूजा के योग्य बनाकर फिर आसन पर मन्त्रोच्चारणपूर्वक जल छिड़ककर पाद्य, अर्घ्य आदि के पात्रों को स्थापित करे। तदनन्तर एकाग्रचित्त होकर हृदय में भगवान का ध्यान करके फिर उसका सामने की श्रीमूर्ति में चिन्तन करे। तदनन्तर हृदय, सिर, शिखा का **हृदयाय नमः, शिरसे स्वाहा** इत्यादि मन्त्रों से न्यास करे और अपने इष्टदेव के मूलमन्त्र के द्वारा देश, काल आदि के अनुकूल प्राप्त पूजा-सामग्री से प्रतिमा आदि में अथवा हृदय में भगवान की पूजा करे। अपने-अपने उपास्य-देव के विग्रह की हृदयादि अंग, आयुधादि उपांग और पार्षदोंसहित उनके मूलमन्त्र द्वारा पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्प, दधि-अक्षत के तिलक, माला, धूप, दीप और नैवेद्य आदि से विधिवत् पूजा करे तथा फिर स्तोत्रों द्वारा स्तुति करके सपरिवार भगवान श्रीहरि को नमस्कार करे। अपने-आपको भगवन्मय ध्यान करते हुए ही भगवान की मूर्ति का पूजन करना चाहिए। निर्माल्य को अपने सिर पर रखे और आदर के साथ भगवद्विग्रह को यथास्थान स्थापित कर पूजा समाप्त करनी चाहिए। इस प्रकार जो पुरुष अग्नि, सूर्य, जल, अतिथि और अपने हृदय में आत्मरूप श्रीहरि की पूजा करता है, वह शीघ्र ही मुक्त हो जाता है।''

राजा निमि ने पूछा : ''योगीश्वरो ! भगवान स्वतन्त्रता से अपने भक्तों की भक्ति के वश होकर अनेकों प्रकार के अवतार ग्रहण करते हैं और अनेकों लीलाएँ करते हैं। आप लोग कृपा करके भगवान की उन लीलाओं का वर्णन कीजिये, जो वे अब तक कर चुके हैं, कर रहे हैं या करेंगे।''

अब सातवें योगीश्वर द्रुमिलजी ने कहा : ''राजन् ! भगवान अनन्त हैं। उनके गुण भी अनन्त हैं। जो यह सोचता है कि मैं उनके गुणों को गिन लूँगा, वह मूर्ख है, बालक है। यह तो सम्भव है कि कोई किसी प्रकार पृथ्वी के धूलि-कणों को गिन ले परंतु समस्त शक्तियों के आश्रय भगवान के अनन्त गुणों का कोई कभी, किसी प्रकार पार नहीं पा सकता। भगवान ने ही पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश - इन पाँच भूतों की अपने-आपसे, अपने-आपमें सृष्टि की है। जब वे इनके द्वारा विराट शरीर, ब्रह्माण्ड का निर्माण करके उसमें लीला से अपने अंश अन्तर्यामीरूप से प्रवेश करते हैं, (भोक्ता रूप से नहीं, क्योंकि भोक्ता तो अपने पुण्यों के फलस्वरूप जीव ही होता है) तब उन आदिदेव नारायण को 'पुरुष' नाम से कहते हैं, यही उनका पहला अवतार है। उन्हींके इस विराट ब्रह्माण्ड शरीर में तीनों लोक स्थित हैं। उन्हींकी इन्द्रियों से समस्त देहधारियों की ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ बनी हैं। उनके स्वरूप से ही स्वतःसिद्ध ज्ञान का संचार होता है। उनके श्वास-प्रश्वास से सब शरीरों में बल आता है तथा इन्द्रियों में ओज (इन्द्रियों की शक्ति) और कर्म करने की शक्ति प्राप्त होती है। उन्हींके सत्त्व आदि गुणों से संसार की स्थिति, उत्पत्ति और प्रलय होते हैं। इस विराट शरीर के जो शरीरी हैं, वे ही आदिकर्ता नारायण हैं। **(क्रमशः)**

वे कहते हैं...

स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज

जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी

संत ज्ञानेश्वरजी

श्री अरविन्द घोष

महात्मा गाँधीजी

श्रीमद्भगवद्गीता के विषय में
संतों एवं विद्वानों के विचार

जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए गीताग्रंथ अद्भुत है । विश्व की ५७८ भाषाओं में गीता का अनुवाद हो चुका है । हर भाषा में कई चिन्तकों, विद्वानों एवं भक्तों ने मीमांसाएँ की हैं और अभी भी हो रही हैं, होती रहेंगी क्योंकि इस ग्रंथ में किसी भी देश, जाति, पंथ के सभी मनुष्यों के कल्याण की अलौकिक सामग्री भरी हुई है । अतः हम सबको गीताज्ञान में अवगाहन करना चाहिए। भोग, मोक्ष, निर्लेपता, निर्भयता आदि तमाम दिव्य गुणों का विकास करानेवाला यह गीताग्रंथ विश्व में अद्वितीय है ।

– ब्रह्मनिष्ठ स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज

विरागी जिसकी इच्छा करते हैं, संत जिसका प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं और पूर्ण ब्रह्मज्ञानी जिसमें **'अहमेव ब्रह्मास्मि'** की भावना रखकर रमण करते हैं, भक्त जिसका श्रवण करते हैं, जिसकी त्रिभुवन में सबसे पहले वन्दना होती है, उसे लोग 'भगवद्गीता' कहते हैं।

– संत ज्ञानेश्वरजी

'गीता' मेरी बाइबिल या कुरान (धर्मग्रंथ) ही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष माता ही है। 'गीता' जगत-जननी है। वह किसीको निराश वापस नहीं करती। – महात्मा गाँधी

भगवद्गीता किंचिदधीता गंगाजललवकणिका पीता।
येनाकारिमुरारेरर्चा तस्य यमै किं क्रियते चर्चा ॥

जिस मनुष्य ने श्रीमद्भगवद्गीता का थोड़ा भी अध्ययन किया हो, श्रीगंगाजल का एक बिन्दु भी पान किया हो अथवा भगवान श्रीविष्णु का सप्रेम पूजन किया हो, उसे यमराज नजर उठाकर देख भी नहीं सकते । अर्थात् वह संसार-बंधन से मुक्त होकर आत्यन्तिक आनन्द का अधिकारी हो जाता है।

– जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी

'गीता' शास्त्र एक परम रहस्यमय ग्रंथ है । इसका प्रचारक भगवान को अत्यंत प्रिय है । भगवान ने स्वयं कहा है :

'मनुष्यों में उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करनेवाला कोई भी नहीं है तथा पृथ्वी भर में उससे बढ़कर मेरा प्रिय दूसरा कोई भविष्य में होगा भी नहीं जो गीता-ज्ञान का प्रचार करता है।'

– स्वामी रामसुखदासजी

'भगवद्गीता' के उपदेश पर कोई शंका नहीं कर सकता क्योंकि वह मानों ठीक मर्मस्थल को स्पर्श करता है। वह सब आवश्यकताओं की समान रूप से पूर्ति करता है, उसमें विकास की प्रत्येक श्रेणी पर विचार किया गया है। यह एक ही ग्रंथ है, जिसमें छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा मनुष्य, अतिशय प्रखर बुद्धि का विचारक, सभीको कुछ-न-कुछ जानने तथा सीखने की सामग्री मिल जाती है, मार्ग सीखने के लिए कोई-न-कोई ध्रुव तारा मिल जाता है । वे धन्य हैं जो गीता को पढ़ते हैं, सुनते हैं, सुनाते हैं । – रेवरेंड आर्थर

'गीता' के संदेश का प्रभाव आचार-विचारों के क्षेत्र में भी सदैव जीता-जागता प्रतीत होता है।

– श्री अरविन्द घोष

(गीता जयंती : १ दिसम्बर २००६)

विद्यार्थी जीवन में गीता

महात्मा गाँधी 'श्रीमद्भगवद्गीता' के परम भक्त थे। 'गीता' को वे अपनी माता समान मानते थे। उनकी सफलता का रहस्य ज्ञान के अक्षय भंडार से सुसज्जित परम पावन 'गीता माता' ही थीं। जब भी वे कभी जीवन की विषम परिस्थितियों में संघर्ष करते-करते स्वयं को हताश-निराश पाते तो 'गीता माता' की वात्सल्यमयी निर्मल गोद का आश्रय लेकर पुनः उनका सामना करने की अपूर्व शक्ति, आशा व तरोताजगी से परिपूर्ण हो जाते। उनका मानना था कि 'गीता' केवल बड़ी उम्र के लोगों के लिए ही उपयोगी नहीं है अपितु विद्यार्थी भी इसका लाभ उठाकर अपने चरित्र के हर पहलू को उज्ज्वल बना के महान बन सकते हैं। 'गीताजी' के विषय में गाँधीजी कहते हैं :

''कुछ लोग कहते हैं, 'गीता' तो महागूढ़ ग्रंथ है पर हमारे जैसे साधारण मनुष्य के लिए यह गूढ़ नहीं है। 'गीता' में तीन जगहों पर यह आता है कि 'सब धर्मों को छोड़कर तू केवल मेरी (भगवान की) ही शरण ले।' इससे अधिक सरल और सादा उपदेश क्या हो सकता है ? जो भी मनुष्य 'गीता' में से अपने लिए आश्वासन प्राप्त करना चाहे, उसे उसमें से वह पूरा-पूरा मिल जाता है। जो मनुष्य 'गीता' का भक्त है, उसके लिए निराशा की कोई जगह नहीं, वह हमेशा आनंद में रहता है पर इसके लिए बुद्धिवाद नहीं बल्कि अव्यभिचारिणी भक्ति चाहिए। अब तक मैंने एक भी ऐसे आदमी को नहीं जाना, जिसने 'गीता' का अव्यभिचारिणी भक्ति से सेवन किया हो और उसे 'गीता' से आश्वासन न मिला हो।

तुम विद्यार्थी लोग कभी परीक्षा में फेल हो जाते हो तो निराशा के सागर में डूब जाते हो। 'गीता' निराश होनेवालों को पुरुषार्थ सिखाती है, आलस्य और व्यभिचार का त्याग करना बताती है। एक वस्तु का ध्यान करना, दूसरी चीज बोलना और तीसरी को सुनना इसको 'व्यभिचार' कहते हैं। 'गीता' सिखाती है कि मनुष्य को केवल प्रयत्न करने का अधिकार है, फल पर उसका कोई अधिकार नहीं। यह आश्वासन मुझे कोई नहीं दे सकता, यह तो अनन्य भक्ति से ही प्राप्त होता है।

एक सत्याग्रही की हैसियत से मैं कह सकता हूँ कि इसमें से मुझे नित्य ही कुछ-न-कुछ नयी वस्तु मिलती रहती है। कोई मुझे कहे कि 'यह तुम्हारी मूर्खता है' तो मैं उसे कहूँगा कि 'मैं अपनी इस मूर्खता पर अटल रहूँगा।' इसलिए सब विद्यार्थियों से मैं कहूँगा कि रोज सवेरे उठकर तुम इसका अभ्यास करो। मैं संत तुलसीदासजी का भक्त हूँ पर तुम लोगों को इस समय मैं संत तुलसीदासजी नहीं सुझाता हूँ। विद्यार्थी की हैसियत से तुम 'गीता' का ही अभ्यास करो पर द्वेषभाव से नहीं भक्तिभाव से। तुम इसमें भक्तिपूर्वक प्रवेश करोगे तो जो तुम्हें चाहिए वह इसमें से मिलेगा।

'गीता' के अठारहों अध्याय कंठस्थ करना कोई खेल नहीं है, पर करने जैसी चीज तो है ही। तुम एक बार

(शेष पृष्ठ २१ पर)

पार्वतीजी का बनाया पुलाव !

● बापूजी के सत्संग-प्रवचन से

कैसा-कैसा सड़ा अनाज होता है ! हजारों जीव चक्की में रोज पिस जाते हैं, कौन पूछता है उनको ? पतंगे दीये में जल के मर जाते हैं, कभी तो वे भी मनुष्य थे ! वसिष्ठजी कहते हैं : हे रामजी ! जो साँप होकर, केंचुए होकर, बिच्छू होकर, मकोड़े और कीड़े होकर भटक रहे हैं वे भी कभी मनुष्य थे लेकिन मन में आया ऐसा करते गये, झूठ बोलते गये, कपट करते गये, मजा लेते गये तो वे नीच योनि को प्राप्त हुए, दीन हो गये।

दीनबंधु दीनानाथ ! मेरी डोरी तेरे हाथ ।

परंतु दीनबंधु क्या करे ? उसने शास्त्र बनाये, सत्संग दिया पर आदमी बेईमानी नहीं छोड़े तो फिर नीच-से-नीच वृत्ति का अभ्यास हो जाता है और वह नीच योनि को प्राप्त होता है । आदमी जितना नीचा होता है उतना ही उसको महापुरुष में भी दोष दिखेगा और ऊँचा आदमी है तो कुत्ते में भी भगवान दिखते हैं। संत नामदेवजी को कुत्ते में भगवान दिखे और जिनके पाप जोर मार रहे हैं, जिनके ऊपर दुःख के पहाड़ गिरनेवाले हैं उन दुर्बुद्धि लोगों को तो महात्मा में भी, संत में भी दोष दिखने लग जाता है। धोबी रामजी में भी दोष देखता है ! दूसरों को तो रामजी में गुण दिखते हैं परंतु रावण कहता है : 'हूँऽ... श्रीराम मत कहो ।' गोपियाँ तो भगवान श्रीकृष्ण को देखकर गद्‌गद होती हैं लेकिन कंस श्रीकृष्ण का चिंतन करके परेशान हो रहा है। अब श्रीकृष्ण तो श्रीकृष्ण हैं, जो कंस बुद्धि का है वह परेशान हो जाय तो श्रीकृष्ण क्या करें ? जो रावण बुद्धि का है वह परेशान हो जाय तो श्रीरामजी क्या करें ? सबकी अपनी-अपनी मति-गति है। शिवजी में भी दोष देखते हैं कुछ लोग । जिसके भाग्य में दुःख है उसको सज्जनों में दोष दिखता है और भगवान श्रीकृष्ण को कुत्ते में भी सद्‌गुण दिखता है कि 'उसके दाँत चमक रहे हैं- यह इसके पुण्य का फल है।'
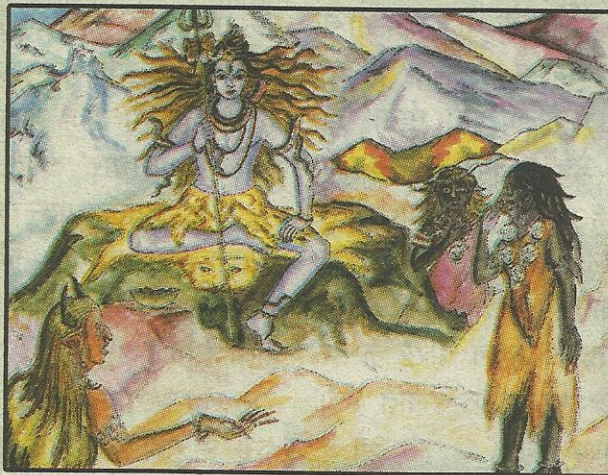
जो दुर्बुद्धि होते हैं, दोष-दर्शन करते हैं उनको प्यार क्या मिलेगा, उनको तो खुलेआम डाँट-फटकार मिलती है।

महापुरुष इतने लोगों को सुख-शांति और ज्ञान देते हैं, उनके ज्ञान का यह प्रभाव दूषित हृदयवाले को नहीं दिखता। 'हमसे बात नहीं की, हमारे साथ ऐसा हुआ...' इस प्रकार जो फरियाद करते हैं वे भगवान के लिए, सत्शास्त्र के लिए या किसीके लिए नहीं, अपने लिए ही मुसीबत पैदा कर लेते हैं।

काहु न कोऊ सुख-दुःख कर दाता ।

कोई किसीको दुःख नहीं देता, अपनी बेवकूफी, अपना अज्ञान, अपनी नासमझी व्यक्ति को दुःखी कर देती है और सत्संग के द्वारा, भगवान के जप-ध्यान के द्वारा अपनी समझदारी बढ़ाने पर व्यक्ति सुखी हो जाता है।

एक तो अशुभ धारा होती है और दूसरी शुभ धारा

होती है, शुभ विचार होते हैं। ऐसा नहीं कि संत के प्रति अश्रद्धा ही होती है, नहीं, श्रद्धा भी होती है। श्रद्धा, कभी अश्रद्धा... भगवान में भी कभी श्रद्धा, कभी अश्रद्धा - ऐसा होता रहता है। शुभ और अशुभ, श्रद्धा और अश्रद्धा दो धाराएँ हैं तो शुभ को बलवान बनाओ। जैसे खेत में अच्छे बीज फलते हैं किंतु फालतू घास भी तो होती है, ऐसे ही जीवन में सत्कर्म, सद्भाव तो होते हैं लेकिन फालतू कर्म, बेकार भाव भी होते हैं।

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं।

सज्जनता-दुर्जनता, श्रद्धा-अश्रद्धा, शुभ-अशुभ सबके अंदर रहते हैं परंतु जिसका शुभ जितना पक्का है उतनी उसकी बहादुरी है और जिसका शुभ जितना कम है तथा अशुभ, बदमाशी का स्वभाव जितना गहरा है, उतनी उसकी कमजोरी है। कमजोर को तो निम्न फल मिलता है और ऊँचे को ऊँचा फल मिलता है। **करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि...** यह जरूरी नहीं है कि संत के पास रहते हैं तो सब शिष्य वफादार ही होते हैं। नहीं, ऋषि दयानंद के रसोइये ने ऋषि दयानंद से गद्दारी की। ऋषि हों चाहे संत हों, उनके पास सब किस्म के लोग रहते हैं। भगवान शिवजी के पास भी सब किस्म के लोग रहते हैं : भूत-प्रेत, डाकिनी-शाकिनी... वे शिवजी के आगे तो भगत हो जाते परंतु पार्वती के प्रति ईर्ष्या करते कि 'शिवजी हमारी तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं, पार्वती से ही बात करते हैं। शिवजी ध्यान में बैठेंगे, तब हम क्या हैं दिखा देंगे।'

एक बार वे योगिनियाँ, डाकिनियाँ, शाकिनियाँ पार्वतीजी को उठा के ले गयीं और पार्वती का पुलाव बना दिया तथा बड़ा उत्सव करके पहले शिवजी के लिए बड़ा कटोरा भर के रख दिया, अब कैलाश में तो भाई फ्रिज-ही-फ्रिज है, वहाँ तो फ्रिज अलग से लेना नहीं पड़े। उन्होंने अपने ढंग से कुछ पुलाव ढँक के रख दिया और बाकी का खुद खाया। सोचा कि 'अब देखें, शिवजी ध्यान में से उठेंगे तो प्रिय पार्वती को कैसे अनुभव सुनाते हैं। अब हमारे आगे ही बात करेंगे, हमारी कद्र करेंगे।'

अलंबुषा ने कहा : 'हमसे बात करेंगे' तो सौरी ने कहा : 'नहीं, हमसे बात करेंगे' कौमारी ने कहा : 'ऊँह, तुमसे क्या बात करेंगे ? मेरे से करेंगे' तो शाकिनी ने कहा : 'ऊँह, मेरे से करेंगे ?' - इस प्रकार वे अपनी-अपनी शेखी बघारने लगीं। समय पाकर शिवजी ध्यान-समाधि से उठे। शिवजी के उठने पर पार्वतीजी शिवजी को यथायोग्य प्रसाद देती थीं तो वे भूतनियाँ, डाकिनी-शाकिनियाँ पुलाव ले आयीं। पार्वती के मांस से जो पुलाव बनाया था वह शिवजी के आगे रखा !

शिवजी ने देखा कि इन्होंने प्रिय पार्वती का हरण करके उसका पुलाव बनाया है। शिवजी ने जरा कड़काई से आँख दिखा दी तो उनकी तौबा-तौबा हो गयी। अब क्या करें ? वे तो सोच रही थीं कि पार्वती नहीं होंगी तो हमको शिवजी प्यार से बिठायेंगे, हमसे बात करेंगे लेकिन जो दुर्बुद्धि होते हैं, दोष-दर्शन करते हैं उनको प्यार क्या मिलेगा, उनको तो खुलेआम डाँट-फटकार मिलती है। उनको पार्वती की नाईं प्यार तो नहीं मिला, शिवजी की जरा डाँट मिली तो वे घबरायीं। कौमारी ने ओऽऽऽ करके नासिका निकाली । सौरी ने अहूईऽऽऽ करके कान निकाला, किसीने पार्वती की उँगली निकाली, फलानी ने पार्वती का अँगूठा निकाला, किसीने पार्वती का कलेजा निकाला - ऐसे अंग इकट्ठे करके अपनी यौगिक शक्ति से पार्वतीजी को फिर से जीवित करके उनका शिवजी के साथ विवाह करा दिया। तो भगवान ठहरे आशुतोष... उन पर प्रसन्न हो गये कि 'चलो, कोई बात नहीं।' यह प्रसंग 'श्रीयोगवासिष्ठ' निर्वाण प्रकरण (पूर्वार्ध) के सर्ग १८-१९ में आता है।

हम छोटे थे तो हमने देखा कि शिवजी की बारात में ये भूतनियाँ, डाकिनियाँ... कोई तुरही बजा रहे हैं, कोई कुछ कर रहे हैं ? मैं उनके बारे में पूछता था तो बोले : 'शिवजी की शादी हो रही थी तब की तस्वीर है। शिवजी की बारात में ये सब तुंबुरु आदि हैं।' बाद में शास्त्र-अध्ययन हुआ, 'योगवासिष्ठ' में आया कि ये तो डाकिनियाँ, शाकिनियाँ हैं। चित्रकार ने उनको ऐसा चित्रित किया था। तो **बहुरत्ना वसुंधरा।** यह सृष्टि बहुरत्ना है। इसमें सब किस्म के व्यक्ति होते हैं और हर व्यक्ति में सब किस्म के विचारों की संभावना है। अच्छे विचार भी होते हैं, दुष्ट विचार भी होते हैं और मध्यम

विचार भी होते हैं। अच्छे विचारों का बाहुल्य होता है तो दुष्ट विचार के प्रायश्चित्तस्वरूप सद्विचार भी होता है।

वसिष्ठजी कहते हैं कि हे रामजी ! न जाने किन-किन नीच योनियों में यह जीव भटकता है। अच्छे और बुरे अर्थात् इष्ट और अनिष्ट- ये दो मित्र सबके साथ रहते हैं। सुमति-कुमति सबके साथ रहती है। अगर आप कुमति को निकालने के लिए 'मन को सीख' पुस्तक बार-बार पढ़ें तो बुरे विचार निकालने में सफलता मिलेगी। मेरे गुरुजी ने किसी गिरते हुए साधक को उठाने के लिए शांतचित्त से बैठकर एक खास चिट्ठी लिखवायी थी। मैं उस समय वहीं था। गुरुजी ने खूब गहराई से चिट्ठी लिखवायी थी।

उस चिट्ठी को हमने 'मन को सीख' नाम देकर पुस्तक छपवायी और इसी पुस्तक को पढ़कर, गुरुदेव के ये आत्मिक अनुभव सुनकर कई लोगों का मन पवित्र हुआ। कइयों का उत्थान हो गया। जो 'मन को सीख' ईमानदारी से पढ़ता है वह जरूर हलके विचारों से अपनेको कुछ-न-कुछ बचाता है और हृदयपूर्वक प्रायश्चित्त करता है। जो इसको सद्भाव से पढ़ता है उसको सद्बुद्धि भी मिलती है। इसको पढ़े, 'ईश्वर की ओर' पुस्तक को पढ़े तो अपनेको पतन से बचा सकेगा, नहीं तो इतने मच्छर पैदा हो के मर रहे हैं, कौन चिंता करता है ? इतने कुत्ते की योनि में जा रहे हैं, कौन चिंता करता है ? तुम्हारी चिंता कौन, कब तक करेगा ? तुम सच्चाई से, ईमानदारी से सेवा के रास्ते चलोगे, भगवान के रास्ते चलोगे, श्रद्धा रखोगे तो तरोगे, नहीं तो करोड़ों डूब मर रहे हैं... ईश्वर की सृष्टि में १०-२० हजार डूब मरें तो ईश्वर को क्या घाटा है, गुरु को क्या घाटा है ? अपनेको ही घाटा है। इसीलिए मनुष्य अपने भाग्य का आप विधाता है।

अहैतु की कृपा

संत ज्ञानेश्वर महाराज नदी किनारे से जा रहे थे। तब एक महिला ने उनको प्रणाम किया। ज्ञानेश्वर महाराज ने स्वाभाविक ही उसे आशीर्वाद दिया : 'सौभाग्यवती भव।'

लेकिन उस महिला के पति का तो निधन हो चुका था और वह सती होने जा रही थी। ऐसा आशीर्वाद सुनकर महिला ने ज्ञानेश्वरजी को अपनी वास्तविक स्थिति बतायी और अपने पति को जीवित करने की प्रार्थना की।

ज्ञानेश्वर महाराज ने उस महिला के पति के शव को अपने पावन करकमलों से ज्यों ही स्पर्श किया तो उसका पति जीवित हो उठा। ज्ञानेश्वर महाराज ने उसका नाम सच्चिदानंद रख दिया।

अपने सुहाग को वापस पाकर वह महिला आनंद से सराबोर हो उठी। ज्ञानेश्वरजी ने उस महिला से कहा : ''आपकी इच्छा पूर्ण हो गयी न ? अब आपके पति हमारे पास रहें तो चलेगा ?''

महिला बोली : ''ज्ञानदेव महाराज ! एक नारी अपने सुहाग के अतिरिक्त और कोई इच्छा नहीं रखती। वह आपने पूर्ण कर दी है। मेरे पति को आपका सान्निध्य मिलेगा, यह तो उनका और मेरा परम सौभाग्य है। इसमें तो हम दोनों का ही कल्याण है।''

तबसे सच्चिदानंद ज्ञानेश्वर महाराज के पास ही रहे। लोग उन्हें 'सच्चिदानंद बाबा' के नाम से जानने लगे। नेवासे में दो साल रहकर ज्ञानेश्वर महाराज ने जो प्रवचन किये, उन्हें सच्चिदानंद बाबा ही लिखते थे।

महान भगवद्भक्त प्रह्लाद

(अंक १६५ से आगे)

इसमें संदेह नहीं कि निष्काम-हृदय दैत्यर्षि प्रह्लाद को राजकाज में रात-दिन लिप्त देखकर कुछ मंदमति लोग सोचते थे कि 'जब तक प्रह्लाद के हाथ में राज्याधिकार नहीं था, तब तक तो वे बड़ी-बड़ी त्याग की बातें करते थे और राजपाट को संसार का कठिन बंधन बतलाया करते थे किंतु जबसे स्वयं सम्राट हुए हैं तबसे वे वेदांत और भक्ति की बातें, वे त्याग के उपदेश तथा वह मोक्ष की महिमा हवा हो गयी है एवं राजपाट में स्वयं ही ऐसे चिपक गये हैं, जैसे मीठी वस्तुओं में चींटे चिपक जाते हैं व जीते-जी छोड़ना नहीं चाहते ।'

वे लोग दैत्यर्षि प्रह्लाद को अपनी दृष्टि से देखते थे, अपनी क्षुद्र-बुद्धि के तराजू पर तौलते थे इसलिए उन्हें अपना अनुमान अनुचित नहीं लगता था । किंतु प्रह्लाद में वस्तुतः ऐसी बात नहीं थी । उनके व्यवहार का रहस्य कुछ और ही था । दैत्यर्षि प्रह्लाद के स्वभाव में साम्राज्य-प्राप्ति से रत्तीभर भी परिवर्तन नहीं हुआ था । ब्रह्मचारी प्रह्लाद व सम्राट प्रह्लाद में तनिक-सा भी अंतर नहीं था । प्रत्यक्ष में जो कुछ अंतर दिखलायी पड़ता था, वह लोगों के दृष्टिकोण का दोष था, प्रह्लाद के स्वभाव का नहीं । प्रह्लादजी जो कुछ करते थे, सो सब भगवान की आज्ञानुसार-भगवत्प्रेरणा से, भगवान के लिए करते थे ।

प्रह्लाद सम्राट होकर भी पूर्ववत् निरभिमानी थे, शासनदंडधारी होकर भी प्राणिमात्र के लिए दयानिधान थे और गृहस्थाश्रमी होकर भी परम विरागी थे । वे संसार को पूर्ववत् ही अब भी बंधन ही समझते थे और उससे स्वयं दूर होने तथा समस्त प्राणियों को उससे दूर रखने की चेष्टा करते थे । वे जो कुछ करते थे, सब इसी भावना से करते थे कि यह संसार हमारे प्रभु का विराट स्वरूप है । इसके एक-एक अंग की भक्ति करना, एक-एक अंग की सेवा और पूजा करना हमारा धर्म व कर्तव्य है । दैत्यर्षि अपने साम्राज्य का शासन इसी दृष्टि से करते थे, इसीलिए वे अपने-आपको साम्राज्य के अधीश्वर नहीं किंतु साम्राज्यरूपी भगवत्-शरीर के कर्तव्यपरायण सेवक समझते थे । इसी कारण उनके हृदय में न तो अभिमान का लेश था और न क्रोध आदि छहों शत्रुओं के विकारी भाव ही थे । दैत्यर्षि प्रह्लाद के सर्वप्रिय होने का यही कारण था कि उनको सारा साम्राज्य, अपनी सारी प्रजा समान रूप से प्यारी थी । वे सचमुच **समत्वमाराधनमच्युतस्य** के पुजारी थे ।

जो अनवरत चलनेवाला समय दैत्यराज हिरण्यकशिपु के राजत्वकाल में प्रजाजन के काटे नहीं कटता था और **क्षणमपि यामति यामो दिवसति दिवसाश्च कल्पन्ति** अर्थात् एक क्षण पहर के बराबर, पहर दिन के बराबर और दिन कल्प के बराबर भारी प्रतीत होता था । वही समय प्रह्लाद की अमलदारी में ठीक उसके विपरीत अर्थात् वर्षों का समय दिनों के समान शीघ्र बीतने लगा । इस प्रकार बहुत काल हो जाने पर भी प्रजा को यही प्रतीत होता था कि प्रह्लाद को तो अभी-अभी साम्राज्य प्राप्त हुआ है । ईश्वर करें अभी वे बहुत दिनों तक शासन करते रहें । यह सब कुछ था, किंतु काल तो किसीकी प्रतीक्षा नहीं करता । उसका चरखा तो किसी समय भी बंद नहीं होता । उसकी गति अनवरत है । वह किसीका मान नहीं करता। धीरे-धीरे दैत्यर्षि प्रह्लाद को अपने गार्हस्थ्य जीवन का भी आनंद मिलने लगा और पुत्र-पौत्रादि के सुख का भी समय आ गया । महारानी सुवर्णा उनकी एकमात्र धर्मपत्नी थीं और वे 'एकनारी ब्रह्मचारी' की उक्ति के अनुसार सदा शास्त्र-मर्यादा का पालन करते हुए ब्रह्मचारी रहते थे ।'पद्म पुराण' के अनुसार प्रह्लादजी के चार पुत्र थे - आयुष्मान, शिवि, वाष्कलि और विरोचन । उनका मुख्य पुत्र राजवंशधर विरोचन था। **(क्रमशः)**

(६ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक)

मार्गशीर्ष मास का माहात्म्य

ब्रह्माजी ने भगवान श्रीविष्णु से पूछा : ''हृषीकेश ! आपने पहले कहा है कि **मासानां मार्गशीर्षोऽहम् ।** 'महीनों में मैं मार्गशीर्ष हूँ ।' अतः उस महीने का माहात्म्य क्या है, यह मैं यथार्थ रूप से जानना चाहता हूँ ।''

श्रीभगवान बोले : ''ब्रह्मन् ! जो कोई पुण्य करनेवाले मेरे भक्त हैं उन्हें मार्गशीर्ष मास का व्रत अवश्य करना चाहिए क्योंकि यह मेरी प्राप्ति करानेवाला है । मार्गशीर्ष मास मुझे सदैव प्रिय है । इस मास में ब्राह्ममुहूर्त में उठकर विधिपूर्वक आचमन करके अपने गुरु को नमस्कार करें तथा आलस्य छोड़कर मुझ परमेश्वर का चिंतन करें । फिर प्रातर्विधि से निवृत्त हो के मेरा ध्यान करते हुए एकाग्रचित्त हो मेरे अष्टाक्षर मंत्र का यथाशक्ति हजार या सौ बार जप करें । पहले मानसिक पूजन करके फिर पूजन सामग्रियों द्वारा बाह्य पूजा करें ।

जो शंख में जल लेकर '**ॐ नमो नारायणाय**' मंत्र का उच्चारण करते हुए मुझे नहलाता है, वह पापों से मुक्त हो जाता है । जो जल शंख में रखा जाता है, वह गंगाजल के समान हो जाता है । तीनों लोकों में जितने भी तीर्थ हैं, वे सब मेरी आज्ञा से शंख में निवास करते हैं, इसलिए शंख श्रेष्ठ माना गया है । जो शंख में फूल, जल और अक्षत रखकर मुझे अर्घ्य देता है, उसे अनन्त पुण्य की प्राप्ति होती है । जो वैष्णव मेरे मस्तक पर शंख का जल घुमाकर उसे अपने घर में छिड़कता है, उसके घर में कुछ भी अशुभ नहीं होता । मृदंग, शंख की ध्वनि तथा प्रणव (ॐ) के उच्चारण के साथ किया हुआ मेरा पूजन मनुष्यों को सदैव मोक्ष प्रदान करनेवाला है ।

जो तुलसीदल और आँवलों को भक्तिपूर्वक मुझे अर्पित करता है, वह मनोवांछित फल पाता है । मेरी पूजा के लिए वे ही फूल उत्तम माने गये हैं जो सुंदर रंगवाले, सरस और सुगंधित हों । बासी फूल और बासी जल पूजा के लिए वर्जित माने गये हैं परंतु तुलसीदल और गंगाजल बासी होने पर भी वर्जित नहीं हैं । जिस प्रकार कृष्ण और शुक्ल दोनों पक्षों की एकादशियाँ मुझे प्रिय हैं, उसी प्रकार गौर और कृष्ण दोनों प्रकार की तुलसी भी मुझे प्रिय है । जो मेरी पूजा के लिए तुलसीदल माँगनेवालों को वह दे देते हैं तथा अन्य भक्तों को भी तुलसीदल अर्पण करते हैं, वे मेरे अविनाशी धाम में जाते हैं ।

काले अगुरु से बने धूप से मेरे मंदिर को सुवासित करें । अगुरु का धूप देह और गेह दोनों को पवित्र करता है । राल का बना हुआ धूप राक्षसों का नाश करता है । जो गूगल में भैंस का घी और शक्कर मिलाकर मुझे धूप देता है, मैं उसकी अभिलाषा पूर्ण करता हूँ ।

अनेक बत्तियों से युक्त और घी से भरे हुए दीप को जलाकर जो मनुष्य मेरी आरती उतारता है, वह कोटि

कृष्णभक्त रेहाना तैय्यब

महात्मा गाँधी की प्रसिद्ध शिष्या रेहाना तैय्यब मुसलमान कुल में उत्पन्न होने पर भी बाल्यकाल से ही श्रीकृष्णभक्ति में तल्लीन रहती थीं । प्रसिद्ध लेखक एवं साहित्यकार श्री रामशरणदासजी एक बार उनसे मिलने उनके निवास पर गये । प्रस्तुत है उनके बीच हुई वार्ता के कुछ अंश :

आपकी दृष्टि में देश में दिनोंदिन बढ़ रही नास्तिकता एवं अशांति का मूल कारण क्या है ?

इस पर रेहानाजी बड़ी गम्भीर होकर बोलीं : ''भाईसाहब ! जब योगी भोगी को अपना मार्गदर्शक मानकर उससे कुछ सीखने का प्रयत्न करने लगेगा तो समझ लीजिये कि उस समय घोर कलियुग आ जायेगा एवं अनाचार, पापाचार, अत्याचार और व्यभिचार आदि बढ़ जायेंगे । भारत धर्मप्राण योगियों का परम पवित्र, महान देश है । अन्य पश्चिमी देश भोगियों के देश हैं और भौतिकवादियों के केन्द्र हैं।

भारतभूमि पर भगवान के मंगलमय श्रीचरण पड़े हैं और इसकी पवित्र धरती पर स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने अवतार लेकर लीलाएँ की हैं । त्याग एवं वैराग्य का यह केन्द्र रहा है । अतः यदि भोगी (पश्चिमी देश) हमसे (भारत से) कुछ शिक्षा ग्रहण करें तो ठीक है पर यदि उलटे हम ही उन भौतिकवादी भोगियों के पीछे दौड़ेंगे तो उसका परिणाम क्या होगा ?

आजकल ठीक वही हो रहा है । आज उलटी गंगा बह रही है । जहाँ कभी पश्चिमी देश भारत को धर्मभूमि और योगियों का परम पवित्र देश मानकर उससे शिक्षा ग्रहण किया करते थे, वहाँ उलटा आज हम भारतीय भोगी देशों को अपना पथप्रदर्शक मानकर उनका अंधानुकरण करने में ही महान गौरव का अनुभव कर रहे हैं । देश के घोर अधःपतन का यही मूल कारण है ।''

कुछ लोग भगवान श्रीकृष्ण को ऐतिहासिक पुरुष नहीं मानते । कुछ लोग उन्हें ऐतिहासिक पुरुष तो मानते हैं पर भगवान का साक्षात् अवतार नहीं मानते ? इन विषयों पर आपका मत क्या है ?

इस प्रश्न पर रेहानाजी कुछ भड़क उठीं और बोलीं : ''जो लोग भगवान श्रीकृष्ण के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते, वे कोरे अज्ञानी हैं । कोई उनके अस्तित्व में विश्वास करे या न करे परंतु सत्य तो सत्य ही है ।

भगवान श्रीकृष्ण आज भी समय-समय पर साक्षात् प्रकट होकर भक्तों को अपने दर्शन दिया करते हैं । श्री मीराबाई को उन्होंने प्रत्यक्ष दर्शन दिये थे । सूरदासजी के समक्ष भी प्रकट होकर उन्हें अपना सान्निध्य प्रदान किया था । नरसिंह मेहता की उन्होंने स्वयं प्रकट होकर सहायता की थी और उनकी लड़की का भात भरा था । धर्म पर विपत्ति आने पर वे अवतार लेकर धर्मद्रोहियों का सदा संहार किया करते हैं । उनके अस्तित्व में विश्वास न करनेवाले अज्ञानी हैं ।'' - यह कहते हुए रेहानाजी श्रीकृष्ण-प्रेम में अत्यंत विह्वल हो उठीं । वे बोलीं : ''भगवत्तत्त्व बड़ा गूढ़ और विलक्षण है । इस जानने योग्य परम तत्त्व श्रीकृष्ण को जिसने जान लिया है, वही उस अनिर्वचनीय रसानुभूति का अनुभव कर सकता है । श्रीकृष्णप्रेम ऐसा ही अनूठा है । इसकी टीस को जिसने अनुभव किया है, वही उस दिव्यानंद को जान सकता है :

नहीं इश्क का दर्द लज्जत से खाली,
जिसे 'जौक' है वह मजा जानता है ।

भगवान श्रीकृष्ण को काल्पनिक बतानेवाले स्वयं बिन्दु के समान हैं और भगवान श्रीकृष्ण अथवा राम अनंत सिन्धु हैं । बिन्दु भला सिन्धु का क्या मुकाबला कर सकता है ? कहाँ एक बूँद और कहाँ अगाध समुद्र ! क्या कभी बिन्दु को सिन्धु की गम्भीरता का पूरा ज्ञान हो सकता है ? असंभव ! अतः लोगों की ऐसी उक्तियों का कोई मूल्य नहीं है ।''

रेहाना बहन को 'श्रीमद्भगवद्गीता' के प्रति अटूट श्रद्धा थी। 'गीता' को वे महान और अद्वितीय धर्मग्रंथ मानती थीं। वे लिखती हैं :

'सन् १९२३ में मेरे जीवन में 'गीताजी' प्रकट हुई। मैंने 'यंग इण्डिया' में बापू (गाँधीजी) द्वारा की गयी 'गीता' की प्रशंसा पढ़ी। मैं 'गीता' ले आयी। उसे पढ़ा और पढ़ते-पढ़ते मेरे दिल-दिमाग पर मानों बिजलियाँ गिरती चली गयीं। मैं पागल, विह्वल और व्याकुल हो गयी। मैंने लगातार उसे बीस बार पढ़ लिया, फिर भी उसे हाथ से अलग न रख सकी। रात को तकिये तले रखकर सोती। मेरी आँखों के सामने एक अद्भुत सुंदर, तेजोमय और आनंदमय दुनिया मानों खुल गयी। 'गीता' के सात सौ श्लोकों में मुझे चौदह ब्रह्माण्डों के रहस्य नजर आने लगे। मेरे सभी सवालों के एकदम से जवाब मिल गये। हर उलझन का सुलझाव मिल गया। हर अँधेरे का दीपक मिल गया। हर गुमराही को रहनुमा (मार्गदर्शक) मिल गया। 'गीता' से मैंने सब कुछ पा लिया।'

रेहाना बहन नियमित 'गीता' का पाठ किया करती थीं। 'गीता' के सभी श्लोक उन्हें कंठस्थ थे। वे 'श्रीमद्भगवद्गीता' को सम्मानपूर्वक 'गीता शरीफ' कहकर पुकारा करती थीं।

अंग्रेजी शिक्षा को रेहाना बहन मानसिक गुलामी का प्रतीक मानती थीं। एक बार उन्होंने बड़े दुःख भरे शब्दों में कहा था : 'अंग्रेजी शिक्षा ने हमारे मस्तिष्क को विकृत कर डाला है और अंग्रेजी दवाओं ने शरीर को।'

मौन की शक्ति

दृढ़ करनी है गुरुचरणों में भक्ति,
जाननी होगी मौन की शक्ति।
मौन की महिमा वरणी न जाये,
गुड़ का स्वाद गूँगा कैसे बताये ?

मौन की शक्ति बड़ी विलक्षण,
पल-पल बढ़े प्रभु का सुमिरण।
मौन को जानो तप वाणी का,
अनुभव यह हर ब्रह्मज्ञानी का ॥

मौन का मतलब कुछ न बोलो,
अंतर की तुम आँख को खोलो।
संकल्प विकल्प की हो जाये निवृत्ति,
पहचानो तुम मौन की शक्ति ॥

मौन साधना है महान साधना,
इसके बिना अधूरी है आराधना।
ज्यों-ज्यों मौन अभ्यास बढ़ाओगे,
नश्वर से विरक्त होते जाओगे ॥

जिस दिन पचा लिया गुरु का मौन सत्संग,
खुल जायेगी गुत्थी कि 'मैं हूँ कौन ?'
जीवन-मृत्यु का रहस्य जब समझ में आयेगा,
साधक भवसागर से पार उतर जायेगा ॥

- अशोक भाटिया, दिल्ली।

(पृष्ठ १३ का शेष)

इसका आश्रय लोगे तो देखोगे कि दिनोंदिन इसमें तुम्हारा अनुराग बढ़ेगा। फिर तुम कारागृह में होओ या जंगल में, आकाश में होओ या अँधेरी कोठरी में, 'गीता' का रटन तो निरंतर तुम्हारे हृदय में चलता ही रहेगा और उसमें से तुम्हें आश्वासन मिलेगा। तुमसे यह आधार तो कोई छीन ही नहीं सकता।''

गाँधीजी ने स्वयं 'गीता' के उपदेशों को आत्मसात् किया था, तभी वे महात्मा बन सके और आज भी राष्ट्रपिता के रूप में याद किये जाते हैं। ...तो फिर आप पीछे क्यों रहें ? आप भी आज से ही इस महान ग्रंथ का श्रद्धापूर्वक नित्य पठन प्रारंभ करो, धीरे-धीरे इसकी भगवद्वाणी आपके हृदय में उतरती जायेगी और आपको भी महानता के शिखर पर पहुँचा देगी।

सुखपूर्वक प्रसूति हेतु

वटवृक्ष के पत्ते पर नीचे लिखा यंत्र तथा मंत्र लिखकर गर्भिणी के मस्तक पर रख देने से सुखपूर्वक प्रसव होते देखा गया है ।

मंत्र :

अस्ति गोदावरीतीरे
जम्भला नाम राक्षसी ।
तस्याः स्मरणमात्रेण
विशल्या गर्भिणी भवेत् ॥

यंत्र :

१	८	९	१४
११	१२	३	६
७	२	१५	८
१३	१०	५	४

निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित जल गर्भिणी को पिलाने से भी सारी बाधाएँ दूर होकर सुखपूर्वक प्रसव होता है और जच्चा-बच्चा का कल्याण होता है ।

अच्युतानन्तगोविन्द-
नामोच्चारणभेषजात् ।
नश्यन्ति सकला रोगाः
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥

प्रसव के बाद दूसरे दिन से लेकर कम-से-कम एक सप्ताह तक माता को दशमूल का क्वाथ पिलाया जाय तो माता और बच्चे के स्वास्थ्य पर बहुत अच्छा असर पड़ता है ।

गाय का ताजा दुहा दूध डेढ़ माह तक पीने से गर्भ नहीं गिरता ।

अशिक्षितों को शिक्षा

पटना जनपद में गंगा और सोनभद्र के संगम पर नीलकनटोला नाम का एक ग्राम है । वहीं अपनी कुटी में महाराज श्री कीनाराम विचरण कर रहे थे । संध्या की वेला थी । ग्राम के कुछ भक्त लोग महाराज श्री कीनाराम की सेवा में उपस्थित हुए, प्रणाम किया और अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए आदेश की याचना की । अघोराचार्य श्री कीनाराम ने अपनी सधुक्कड़ी भाषा में-ठेठ शब्दों में अनपढ़ ग्रामीणों को उपदेश देते हुए कहा :

'पूजले देवता और छोड़ले भूत ।' अरे भाई ! जब तुम किसी चीज को सँवारते हो, पूजते हो तो वह तुम्हारा देवता हो जाता है, तुम्हें सुख देता है और उस सुख से तुम्हें शान्ति मिलती है । वह तुम्हारे हर कार्य की कठिनाई को दूर करता है । देखो न, तुम अपने ही द्वार पर पड़े हुए कूड़े के ढेर को साफ करते हो तो प्रसन्न रहते हो, खुश रहते हो और वह कूड़ा तुम्हारे लिए खाद का काम करता है । 'छोड़ले भूत' - यदि कूड़े को साफ नहीं करते हो तो तुम गर्दा-गुबार से भरे रहते हो और वह तुममें मलिनता लाता है । तुम अपने-आपको ही देखो । यदि तुम स्नान करना छोड़ दो, वस्त्र नहीं धोओ, पवित्रता से भोजन नहीं बनाओ और खाओ तो लगता है कि तुम्हारे वस्त्र मलेच्छ की तरह हैं । दूर से देखने पर तुम मलेच्छ मालूम होने लगते हो ।

याद रखो - **'पूजले देवता छोड़ले भूत'** अर्थात् जिस चीज को तुम पूजोगे और सँवारोगे वह तुम्हें देवता की तरह फल प्रदान करेगी। जिस चीज को तुमने पूजना छोड़ दिया, वह तुम्हें भूत की तरह दुःख प्रदान करेगी और तुम्हें मलिनता से ग्रसित करेगी । पूजना, सँवारना और सफाई रखना- ये देवत्व की तरह हैं तथा तुम्हें देवत्व की स्थिति में परिणत करेंगी । किसी करने योग्य कार्य को छोड़ देना, उसमें लापरवाही बरतना तथा आलस्य एवं प्रमाद में इस भावना का शिकार होना कि 'इस कार्य को बाद में कर लूँगा', तुम्हें कलुषित करेगा और ग्रहों से ग्रसित करेगा । याद रखो- **'पूजले देवता और छोड़ले भूत'** । अपने घर से लेकर अपने खेतों तक, अपने मवेशियों से लेकर घर के प्राणियों तक यदि तुम इन्हें सँवारोगे, पोंछोगे और साफ रखोगे तो तुम आनन्दित रहोगे ।

महाराज श्री कीनाराम की बातों को सुनकर अनपढ़ ग्रामीण मन-ही-मन प्रशंसा करने लगे । वे लोग बोले : ''कितनी सहज, कितनी सरल, कितनी व्यावहारिकता से भरी हुई वाणी महाराजश्री के मुख से प्राप्त हुई है । हमलोग कृतकृत्य हुए ।'' उन लोगों ने महाराज श्री कीनाराम को प्रणाम किया और चलते बने।

न्यायालय से बड़ा डंडा !

'न्यायालय बड़ा या डंडा ?' - यह प्रश्न भारतीय लोकतंत्र के सामने मुँह बाये खड़ा है। और इस प्रश्न को खड़ा किया जम्मू-कश्मीर के कांग्रेसी मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद ने भारत के प्रधानमंत्री को यह पत्र लिखकर कि '१३ दिसम्बर २००१ को संसद भवन पर आतंकी हमले के मुख्य आरोपी मोहम्मद अफजल गुरु को न्यायालय द्वारा निर्धारित प्राणदंड की सजा न दी जाय।' न्यायालय ने लंबी प्रक्रिया के बाद निर्णय दिया था कि अफजल गुरु को २० अक्टूबर को फाँसी दे दी जाय। एक कांग्रेसी मुख्यमंत्री ने न्यायप्रक्रिया में राजनीतिक हस्तक्षेप क्यों आमंत्रित किया ? क्या सिर्फ इसलिए कि अफजल को बचाने के लिए कश्मीर घाटी के लोग सड़कों पर उतर आये ? उन्होंने उग्र उन्माद का प्रदर्शन किया, जिससे गुलाम नबी आजाद को अपनी कुर्सी खतरे में लगी । अर्थात् उन्होंने न्यायालय से अधिक महत्त्व उन्माद-प्रदर्शन के डंडे को दिया। उनके मन में भारतीय लोकतंत्र की अस्मिता के प्रतीक संसद भवन पर हमले की पीड़ा से अधिक प्रबल कुर्सी पाने और उस पर बने रहने की आकांक्षा है। क्या सचमुच कांग्रेसी मुख्यमंत्री के मन में यह सवाल नहीं उठा कि एक अफजल को बचाने के लिए कश्मीर घाटी इतनी व्याकुल क्यों है ? क्या भारतीय संसद भवन या उनके अपने राज्य के विधानसभा भवन पर आतंकी हमलों के विरुद्ध भी उनके मन में इतना ही गुस्सा पैदा हुआ था और वे सड़कों पर उतर आये थे ? क्या इससे हम यह मान लें कि वे भारतीय लोकतंत्र के प्रतीकों पर आतंकी हमलों को सही मानते हैं ? अफजल गुरु को बचाने की उनकी छटपटाहट क्या इस बात की सूचक है कि अफजल उनकी राष्ट्रविरोधी मानसिकता का महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि है ? 'अफजल बचाओ अभियान' के इस निहितार्थ को भारत की जनता को साफ-साफ समझना होगा।

१३ दिसम्बर २००१ को संसद भवन पर हमला मामूली नहीं था। टेलीविजन चैनलों पर देखे उस हमले के खौफनाक दृश्य हम अभी भी भूले नहीं हैं। यदि संसद पर तैनात सुरक्षाकर्मियों एवं दिल्ली पुलिस के सिपाहियों ने अपनी जान की बाजी लगाकर उस हमले को विफल न किया होता तो यह देश उस दिन समूचे केंद्रीय मंत्रिमंडल और राजनीतिक नेतृत्व को खो चुका होता। बहुत-से लोग जो इस समय राजनीतिक स्वार्थ के लिए अफजल को फाँसी के फंदे से बचाने के लिए शोर मचा रहे हैं, शायद यह शोर मचाने के लिए जीवित न बचते। उन्हें कृतज्ञ होना चाहिए उन वीर सुरक्षाकर्मियों का, जिन्होंने अपने प्राण गँवाकर उन्हें यह शोर मचाने के लिए जिंदा रखा। इस समय अफजल के प्रति हमदर्दी पैदा करने के लिए मीडिया में उसकी बूढ़ी माँ, पत्नी और बच्चे के फोटो बार-बार प्रदर्शित किये जा रहे हैं; मानवीय संवेदनाओं की दुहाई दी जा रही है। क्या उस जेहादी हमले से संसद भवन और राजनीतिक नेतृत्व की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि देनेवाले नानक चंद, मातबर सिंह नेगी, विजेन्द्र सिंह जैसे सुरक्षाकर्मियों के परिवार नहीं हैं ? क्या राष्ट्रहित के लिए बलि होनेवाले इन वीर सिपाहियों के परिवार अनाथ नहीं हुए हैं ? नानक चंद की जवान विधवा, दो पुत्र, तीन अविवाहित पुत्रियों, मातबर सिंह नेगी की विधवा, पुत्र और दो पुत्रियों, विजेन्द्र सिंह की विधवा और पाँच बच्चों के आँसू पोंछने के लिए इस राष्ट्र ने क्या किया ? क्या हम इतिहास में एक कृतघ्न राष्ट्र के रूप में अपना स्थान बनाना चाहते हैं ? क्यों मीडिया इन शहीदों के बारे में मौन है और राष्ट्रद्रोही आतंकियों के प्रति सहानुभूति जगाने में जुटा है ? और यह एकपक्षीय प्रचार करके भी अफजल के

परिवार का आरोप झेल रहा है कि भारतीय मीडिया कश्मीर विरोधी है ?

भारतीय टेलीविजन, पृथक्तावादी यासीन मलिक को अपने स्टूडियो में बैठाकर भारत विरोधी जहर उगलने का, भारतीय सुरक्षा बलों पर एक लाख कश्मीरियों की हत्या का झूठा आरोप लगाने का अवसर देता है और उससे यह सवाल पूछने का साहस नहीं करता कि यदि वे एक लाख कश्मीरियों की हत्या झेल चुके हैं तो केवल एक जान बचाने के लिए इतना बवाल क्यों ? क्या अफजल आपकी भारत विरोधी शतरंज का बहुत महत्त्वपूर्ण पासा है ? और ये मानवाधिकारवादी...? वही नंदिता हक्सर जो जीलानी को बचाने के लिए दौड़ी थी, अफजल के पक्ष में लेख लिख रही है और बड़े अखबार ऐसे लेखों को छाप रहे हैं। वे गाँधी और भगतसिंह की दुहाई दे रहे हैं। कह रहे हैं कि अफजल को फाँसी देकर हम उसे शहीद बना रहे हैं ? टेलीविजन चैनलों के जनमत संग्रह के अनुसार देश के ८४ प्रतिशत लोग अफजल के क्षमादान के विरुद्ध और उसे मृत्युदंड की सजा देने के पक्षधर हैं पर ये मुट्ठी भर लोग मीडिया के कंधे पर सवार होकर न्यायप्रक्रिया के विरोध का झंडा फहरा रहे हैं; जीलानी को अफजल के समर्थन में प्रेस कांफ्रेंस करने का साहस दे रहे हैं। ये न्यायप्रक्रिया की कमजोरियों को दूर करने के बजाय उन कमजोरियों का लाभ आतंकवादियों को बचाने के लिए कर रहे हैं।

मोहम्मद अफजल को २० अक्टूबर को फाँसी देने के न्यायालय के आदेश का पालन नहीं होगा यह तो उसी दिन तय हो गया था, जब जम्मू-कश्मीर के कांग्रेसी मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री के नाम अपनी चिट्ठी का ढिंढ़ोरा मीडिया में पीट दिया था। उसी दिन राष्ट्रीय सम्मान और सुरक्षा से जुड़े इस अति संवेदनशील विषय को दलीय राजनीति का रंग देना शुरू हो गया था। अफजल को फाँसी की माँग करनेवाले संप्रदायवादी और अफजल की वकालत करनेवाले उदार सेकुलर- जिन्होंने एक डेनिश कार्टूनिस्ट के विरुद्ध भारत की सड़कों पर उन्माद प्रदर्शन की निंदा नहीं की, उस कार्टूनिस्ट की हत्या करनेवाले को ५१ करोड़ रुपये का इनाम देने की सार्वजनिक घोषणा करनेवाले मंत्री को बर्खास्त एवं दंडित करने की माँग नहीं उठायी, एक पुराने कथन को उद्धृत करने के अपराध में पोप के विरुद्ध मौत का फतवा जारी करने की निंदा नहीं की, जो गाँधी हत्या, बाबरी ध्वंस और गुजरात में गोधरा नरसंहार की प्रतिक्रिया का रात-दिन राग अलापकर नफरत की फसल काट रहे हैं, वे हजारों निर्दोष देशवासियों के हत्यारे आतंकियों की प्राणरक्षा के लिए मानवता, क्षमादान, न्यायप्रक्रिया के दोष आदि की दुहाई दें और देश के शासक उनकी बात मान रहे हैं ! इसका एक ही अर्थ निकलता है कि हमारे देश में राष्ट्रभक्ति नहीं राष्ट्रद्रोह की पूजा हो रही है, राष्ट्रहित के ऊपर वोट बैंक राजनीति हावी है। यदि भारत को भारत बने रहना है तो उसे आत्मघाती राजनीति के विरुद्ध खड़ा होना ही होगा।

– देवेन्द्र स्वरूप

लाउडस्पीकर में नमाज नहीं होती

उदयपुर : बरैली शरीफ के फतवे के मुताबिक लाउडस्पीकर में नमाज पढ़ाना सही नहीं है। बरैली से जारी फतवे में इस बारे में निर्देश दिये गये हैं। इमाम हुसैन कमेटी बरकत कॉलोनी के एम.एम. रहमान रजाकादरी ने बताया कि नमाज में लाउडस्पीकर का इस्तेमाल नाजायज है। लाउडस्पीकर में बोलने से आवाज बदल जाती है।

हिन्दू राष्ट्र का ईसाईकरण

ईसाइयों के लिए जारी मिशन मैंडेट (आज्ञापत्र) से उनकी षड्यंत्रकारी योजनाओं का पता चलता है । मिशन मैंडेट में भारत के प्रत्येक राज्य में कार्यरत मिशनरी संगठनों के लिए निर्दिष्ट अवधि में किये जानेवाले सामूहिक ईसाईकरण का लक्ष्य और उसके लिए किये जानेवाले व्यय का स्पष्ट उल्लेख है ।

भारत में नौ लाख चर्च बनाने की योजना

मैंडेट के पृष्ठ ४४७ पर लिखा है - हमारा लक्ष्य भारत के प्रत्येक गाँव (भारत में ५ लाख गाँव हैं) में और शहरों की प्रत्येक कालोनी (बस्ती, मौहल्ला) में कुल मिलाकर ९ लाख चर्च निर्मित करके उन क्षेत्रों में ईसा को माननेवाले समुदायों का निर्माण करना है।

मिशन मैंडेट में ही मिशनरियों द्वारा किये जा रहे कार्यों का खुलासा इस प्रकार है :

पृष्ठ ४७१ - नागपुर का 'फेडरेशन ऑफ एवन्जेलिकल चर्च' अपने २,६०,००० रु. के वार्षिक बजट के द्वारा प्रति वर्ष ७०० लोगों को ईसाई मत की दीक्षा देता है ।

पृष्ठ ४७० - चेन्नई का 'फ्रेंडस मिशनरी प्रेअर बैंड' प्रति वर्ष के अपने १.४५ करोड़ रु. के बजट द्वारा ३,४०० लोगों को ईसाई बनाता है।

पृष्ठ ४७५ - नई दिल्ली की 'इंडियन एवन्जेलिकल टीम' अपने ४० लाख रु. के वार्षिक बजट द्वारा प्रति वर्ष २००० लोगों को ईसाई बनाती है।

पृष्ठ ४७७ - मणिपुर की राजधानी इम्फाल का 'कूकी क्रिश्चन चर्च' २० लाख रु. के वार्षिक बजट द्वारा प्रति वर्ष १०० लोगों को ईसाई बनाता है । कूकी चर्च ने आगामी दस वर्षों में १०० चर्च बनाने का लक्ष्य निश्चित किया है ।

पृष्ठ ४७६- अमलापुरम के 'मन्ना फुल गास्पेल मिनिस्ट्रीज' अपने १ करोड़ रु. के वार्षिक बजट द्वारा प्रति वर्ष ३००० लोगों को ईसाई बनाती है । विगत ५ वर्षों में उसने १५ हजार लोगों को ईसाई बनाया है ।

कोटा राजस्थान की 'एम्मेन्युअल बाइबिल इंस्टीट्यूट' अपने ७० लाख रु. के वार्षिक बजट में प्रति वर्ष ४००० लोगों को ईसाई बनाती है ।

'इंडियन एवन्जेलिकल टीम' के संस्थापक-अध्यक्ष पी.जी. वर्गीस अपनी रिपोर्ट में बताते हैं : 'हमने (आई.ई.टी.) १९७९-१९८९ तक २०० चर्च बनाने का संकल्प किया था । प्रभु यीशू की कृपा से हमने १९८८ में ही अपना लक्ष्य पूरा कर लिया । वर्ष १९८८ तक आई.ई.टी. के साथ २००० ईसाई मतावलम्बी थे । फिर हमने ४०० लोगों को ईसाई बनाने का लक्ष्य रखा, जिसे हमने निश्चित अवधि के पूर्व ही पूरा कर लिया । भारत की क्रिश्चियन मिशनरीज का ध्येय संपूर्ण भारत को ईसाई बनाना है ।'

आखिर ये मिशनरियाँ भारत को ईसाई राज्य क्यों बनाना चाहती हैं ? इसका उत्तर मैंडेट के इस वाक्य से मिलता है, जिसके अनुसार सन् २००० तक भारत में बहुत बड़ी संख्या में ईसा के अनुयायी बनेंगे और भारत के सामाजिक व राजनीतिक जीवन में अपना प्रभाव स्थापित करेंगे ।

शास्त्र वचन

सर्वेषामपि पुण्यानां सर्वेषां श्रेयसामपि ।
सर्वेषामपि यज्ञानां जपयज्ञः परः स्मृतः ॥

'समस्त पुण्यों, श्रेय के सम्पूर्ण साधनों और समस्त यज्ञों में जपयज्ञ को ही सर्वोत्तम माना गया है ।'
(स्कंद पुराण, ब्रा. ब्रह्मो. खंड : १.७)

निरोगता का साधन

● ब्रह्मलीन स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज के अमृतवचन

संयम अर्थात् वीर्य की रक्षा । वीर्य की रक्षा को संयम कहते हैं । संयम ही मनुष्य की तन्दुरुस्ती व शक्ति की सच्ची इमारत है । इससे शरीर सब प्रकार की बीमारी से बच सकता है । संयम-पालन से आँखों की रोशनी वृद्धावस्था में भी रहती है । इससे पाचनक्रिया एवं यादशक्ति बढ़ती है । ब्रह्मचर्य-संयम मनुष्य के चेहरे को सुन्दर व शरीर को सुदृढ़ बनाने में चमत्कारिक काम करता है । ब्रह्मचर्य-संयम के पालन से दाँत वृद्धावस्था तक मजबूत रहते हैं ।

संक्षेप में, वीर्य की रक्षा से मनुष्य का आरोग्य व शक्ति सदा के लिए टिके रहते हैं । मैं मानता हूँ कि केवल वीर्य ही शरीर का अनमोल आभूषण है, वीर्य ही शक्ति है, वीर्य ही ताकत है, वीर्य ही सुन्दरता है । शरीर में वीर्य ही प्रधान वस्तु है । वीर्य ही आँखों का तेज है । वीर्य ही ज्ञान, वीर्य ही प्रकाश है । अर्थात् मनुष्य में जो कुछ दिखायी देता है वह सब वीर्य से ही पैदा होता है । अतः वह प्रधान वस्तु है । वीर्य एक ही ऐसा तत्त्व है कि जो शरीर के प्रत्येक अंग का पोषण करके शरीर को सुन्दर व सुदृढ़ बनाता है । वीर्य से ही नेत्रों में तेज उत्पन्न होता है । इससे मनुष्य ईश्वर द्वारा निर्मित जगत की प्रत्येक वस्तु देख सकता है ।

वीर्य ही आनंद-प्रमोद का सागर है । जिस मनुष्य में वीर्य का खजाना है वह दुनिया के सारे आनंद-प्रमोद मना सकता है और सौ साल की जिंदगी व्यतीत कर सकता है । इससे विपरीत, जो मनुष्य आवश्यकता से अधिक वीर्य खर्च करता है वह अपना ही नाश करता है और जीवन बरबाद करता है । जो लोग इसकी रक्षा करते हैं वे समस्त शारीरिक दुःखों से बच जाते हैं, समस्त बीमारियों से दूर रहते हैं ।

जब तक शरीर में वीर्य होता है तब तक शत्रु की ताकत नहीं है कि वह भिड़ सके, रोग की ताकत नहीं कि वह दबा सके । चोर-डाकू भी ऐसे वीर्यवान से डरते हैं । प्राणी एवं पक्षी उससे दूर भागते हैं । शेर में भी इतनी हिम्मत नहीं है कि वीर्यवान व्यक्ति का सामना कर सके ।

ब्रह्मचारी सिंह समान हिंसक प्राणी को कान से पकड़ सकते हैं । वीर्य की रक्षा से ही परशुरामजी ने क्षत्रियों का कई बार संहार किया था ।

ब्रह्मचर्य पालन के प्रताप से ही हनुमानजी समुद्र पार करके लंका जा सके और सीताजी का समाचार ला सके । ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही भीष्म पितामह उनके अंतिम समय में कई महीनों तक बाणों की शय्या पर सो सके एवं अर्जुन से बाणों के तकिये की माँग कर सके । वीर्य की रक्षा से लक्ष्मणजी ने मेघनाद को हराया और ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही भारत के मुकुटमणि महर्षि दयानंद सरस्वती ने दुनिया पर विजय प्राप्त की ।

इस विषय में कितना लिखें, दुनिया में जितने भी सुधारक, ऋषि-मुनि, महात्मा, योगी व संत हो गये हैं, उन सभीने ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही लोगों के दिल जीत लिये हैं । अतः वीर्य की रक्षा ही जीवन है और वीर्य को गँवाना ही मौत है ।

परंतु आजकल के नवयुवकों व युवतियों की हालत देखकर अफसोस होता है कि भाग्य से ही कोई विरला युवान ऐसा होगा कि जो वीर्यरक्षा को ध्यान में रखकर केवल प्रजोत्पत्ति के लिए अपनी पत्नी के साथ समागम करता होगा । इससे विपरीत, आजकल के युवान जवानी के जोश में बल और आरोग्य की परवाह किये बिना विषय-भोगों में बहादुरी मानते हैं । उन्हें मैं नामर्द ही कहूँगा ।

जो युवान अपनी वासना के वश हो जाते हैं, ऐसे युवान दुनिया में जीने के लायक ही नहीं हैं । वे केवल कुछ दिन के मेहमान हैं । ऐसे युवानों के आहार की ओर नजर डालेंगे तो पायेंगे कि केक, बिस्कुट, अंडे, आइस्क्रीम, शराब आदि उनके प्रिय व्यंजन होंगे, जो वीर्य को पतला बनाकर (क्षीण करके) शरीर को मृतक बनानेवाली चीजें हैं । ऐसी चीजों का उपयोग वे खुशी से करते हैं और अपनी तन्दुरुस्ती की जड़ काटते हैं ।

(क्रमशः)

(२३ अक्टूबर २००६ से १७ फरवरी २००७ तक)

बलवर्धन का काल - शीत ऋतु

शीत ऋतु में पौष्टिक पदार्थों व रसायन द्रव्यों का सेवन कर सम्पूर्ण वर्ष के लिए आवश्यक बल को युक्तिपूर्वक संगठित करना चाहिए।

बलप्रदायक प्रयोग

- रात को ५० ग्राम अथवा पाचनशक्ति के अनुसार देशी चने पानी में भिगो दें। सुबह चनों में हरा धनिया, पालक, गाजर, पत्तागोभी, मूली सब कच्चे ही काट के डाल दें। इसमें पिसी हुई काली मिर्च व सेंधा नमक मिलाकर नींबू निचोड़ दें। इसे नाश्ते के रूप में खूब चबा-चबाकर खायें। दोपहर के भोजन के बाद पके हुए १-२ केले खायें। यह प्रयोग पूरे शीतकाल में करने से शरीर पुष्ट, सुडौल व बलवान बनता है। रक्त की भी वृद्धि होती है।
- एक चम्मच मक्खन, उतनी ही पिसी मिश्री व एक चुटकी पिसी हुई काली मिर्च को खूब मिलाकर चाट लें। ऊपर से कच्चे नारियल (अष्टमी को नारियल न खायें) के २-३ टुकड़े व थोड़ी-सी सौंफ खा लें। बाद में १ कप गर्म दूध पीयें। इसे और पौष्टिक बनाने के लिए २-३ बादाम रात को पानी में भिगोकर सुबह चंदन की तरह घिसकर मक्खन-मिश्री में मिला कर लें।

पौष्टिक छुहारा

खजूर को सुखाकर छुहारा बनाया जाता है। सुलभ व सस्ते छुहारे अपने में शक्ति का खजाना सँजोये हुए हैं। इनमें लौह, कैल्शियम, फॉस्फोरस व ताँबा विपुल मात्रा में पाया जाता है। दूध के साथ छुहारों का सेवन करने से रक्त व मांस की वृद्धि होती है। अस्थियाँ मजबूत बनती हैं। वीर्य पुष्ट होता है। हृदय व फेफड़ों को बल मिलता है। दुर्बलता के कारण होनेवाला अनियमित मासिक समय पर होने लगता है। स्वप्नदोष तथा विभिन्न व्याधियों के कारण उत्पन्न दुर्बलता, हृदय की कमजोरी व रक्ताल्पता में दूध के साथ छुहारों का सेवन बहुत ही लाभदायी है। इससे कब्ज तथा कमर का दर्द भी दूर होता है। यह प्रयोग रात को करने से स्वर सुरीला होता है। बालकों की बिस्तर में मूत्र त्यागने की प्रवृत्ति दूर होती है।

सेवन-विधि :

२०० मि.लि. दूध में उतना ही पानी व ३-४ छुहारे (गुठली निकालकर) मिला के धीमी आँच पर तब तक उबालें, जब तक मिलाया हुआ पानी जल न जाय। बाद में छुहारे खाकर ऊपर से दूध पीयें। दूध को अगर लोहे के बर्तन में उबाला जाय तो विशेष शक्तिदायक होगा।

इसके सेवन के बाद डेढ़-दो घंटे तक जल नहीं पीना चाहिए। ३-४ माह तक लगातार सेवन करने से मुख का सौंदर्य व कांति बढ़ती है। केश घने व लम्बे होते हैं। यह प्रयोग सभी उम्र के व्यक्तियों के लिए बलकारी है।

नोट : श्वास के रुग्ण केवल २-२ छुहारे सुबह-शाम खूब चबा-चबाकर खायें। इससे फेफड़ों को शक्ति मिलती है एवं कफ का शमन होता है।

हरी सब्जियों से नेत्रसुरक्षा

५० वर्ष की उम्र के बाद अधिकांश व्यक्ति आँखों के 'मैक्युलर डिजनरेशन' नामक रोग से पीड़ित होने लगते हैं। इस रोग में नेत्र के दृष्टिबिंदु 'मैक्युला' की कोशिकाएँ नष्ट होने लगती हैं, जिससे दृष्टि धुँधली होने लगती है।

हरी सब्जियों में 'एंटी ऑक्सिडेंट' नामक तत्त्व होता है, जो नेत्रों की 'मैक्युलर डिजनरेशन' से सुरक्षा करता है। जीवन्ती, पालक, बथुआ, मेथी, पत्तागोभी, शलगम में यह विशेषरूप से पाया जाता है। अतः प्रौढ़ावस्था प्राप्त होने पर हरी पत्तेदार सब्जियों का विशेषरूप से सेवन करना चाहिए।

शीत ऋतु में रसायन

बड़ी हरड़ का चूर्ण हेमंत ऋतु (२३ अक्टूबर से २० दिसम्बर २००६ तक) में समभाग सोंठ मिलाकर तथा शिशिर ऋतु (२१ दिसम्बर २००६ से १७ फरवरी २००७ तक) में समभाग पीपर मिलाकर प्रातः खाली पेट अवश्य लेना चाहिए। यह उत्तम रसायन है।

वज्ररसायन

आयुष्यं सौख्यदं एव बलरूपप्रदं तथा।
रोगघ्नं मृत्युहारी च अस्ति वज्ररसायनम् ॥

'वज्ररसायन आयुष्यवर्धक, सुखकर, बल व रूप प्रदायक तथा रोग एवं अकालमृत्यु को हरनेवाला है।'

शुद्ध हीराभस्म व रसायन चूर्ण के संयोग से बना यह कल्प देह को वज्र के समान दृढ़ व स्वर्ण के समान तेजस्वी, कांतिमान तथा सुंदर बनाता है। यह त्रिदोषशामक, जठराग्निवर्धक, ओज, बल तथा मेधा वर्धक व परम वृष्य अर्थात् श्रेष्ठ वीर्यवर्धक है। मस्तिष्क को बल देकर यह बुद्धि, धृति, स्मृति व इंद्रियों की कार्यक्षमता बढ़ाता है। नेत्र, हृदय, मस्तिष्क, अस्थि व प्रजनन संस्थान के लिए यह विशेष हितकारी है।

हृदय : वज्ररसायन रक्तवाहिनियों को विकसित कर रक्त संवहन क्रिया को गतिशील करता है। अतिरिक्त कोलेस्ट्रॉल के कारण हृदय की रक्तवाहिनियों में उत्पन्न अवरोध को दूर कर यह हृदयोपघात (Heart attack) से रक्षा करता है। हृत्शूल (Angina Pectoris), हृद्व्यास (हृदय की आकार वृद्धि- Cardio megaly), हृद्ध्वनिविकृति, कार्डिअॅक अस्थमा, रुमेटिक हार्ट डिसीज (Rheumatic heart disease) में इसके उपयोग से विस्मयकारक परिणाम प्राप्त हुए हैं। कोरोनरी आर्टरी डिसीज में जहाँ अॅन्जिओप्लास्टी अथवा बायपास सर्जरी अवश्यंभावी मानी जाती है, वहाँ कई रुग्ण अन्य औषधियों के साथ वज्ररसायन का उपयोग कर ऑपरेशन के बिना पूर्ण स्वस्थता का अनुभव कर रहे हैं।

मस्तिष्क व नेत्र : यह नेत्रों तथा नाड़ी संस्थान को दृढ़ बनाता है। अतः विभिन्न नेत्ररोग, पक्षाघात (Paralysis), कंपवात (Parkinson's Disease) व मस्तिष्क की दुर्बलता में इसका सेवन परम लाभदायी है।

प्रजनन संस्थान : वज्ररसायन शुक्रोत्पादक ग्रंथियों को बल देकर शुक्राणुओं की संख्या (Sperm Count) को तेजी से बढ़ाता है। क्लैब्य, नपुंसकता, शुक्रक्षय (Oligospermia) व अति संभोगजन्य शारीरिक क्षीणता को दूर करने के लिए यह एक अद्वितीय औषधि है।

वार्धक्यजन्य दुर्बलता, धातुक्षयजन्य वातव्याधि, क्षय, राजयक्ष्मा (T.B.), अस्थिक्षय (Osteoporosis), मधुमेह (Diabetes mellitus), पांडु (Anaemia) जैसी व्याधियों में शरीर को विशेष पोषक तत्त्वों की आवश्यकता होती है, वज्ररसायन अपने योगवाही व रसायन गुणों से उनकी शीघ्र पूर्ति करता है।

कैंसर : विजातीय खान-पान से शरीर में गाँठे बन जाती हैं। उनसे कैंसर की संभावना होती है। यह कैंसर की संभावनाओं को नष्ट करता है और कैंसर को भी नष्ट करता है। स्तन ग्रंथि, पौरुषग्रंथि की वृद्धि (Enlargement of prostate) दूर होने में अतीव सहायता मिलती है। अत्यंत क्षीणावस्था को प्राप्त मृतप्राय रोगी को भी नवजीवन प्रदान करने की अद्भुत शक्ति इसमें निहित है।

सेवन विधि : आधी से एक गोली दिन में एक से दो बार दूध, घी, मक्खन, शुद्ध शहद अथवा गुलकंद के साथ लें।

कैंसर में ताम्रभस्म, हृदयरोगों में मुक्ताभस्म, राजयक्ष्मा में स्वर्णभस्म व नपुंसकता में मकरध्वज के साथ लेने से विशेष लाभदायी होता है।

सावधानी : वज्ररसायन सेवन करते समय मूली, चौलाई, खटाई (दही, टमाटर आदि), तेल व साधारण नमक का उपयोग नहीं करना चाहिए। घी व सैंधव नमक का उपयोग कर सकते हैं।

कृपया वैद्यकीय सलाह से सेवन करें।
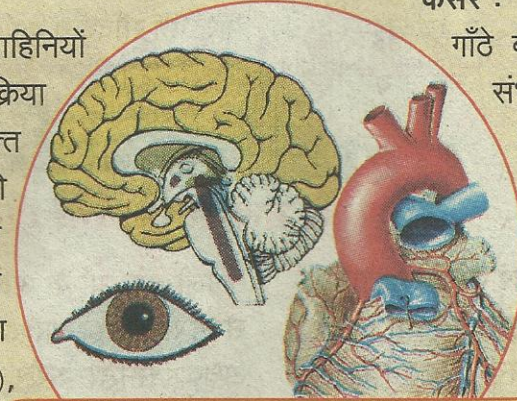
सौभाग्य-शुंठी पाक

इस पाक के लाभादि का वर्णन भगवान महादेव ने माता पार्वती के समक्ष किया था । नारदजी ने इसे ब्रह्माजी के श्रीमुख से सुना था और अश्विनीकुमारों ने इस पाक का निर्माण किया था ।

इस पाक के सेवन से बल, कांति, बुद्धि, स्मृति, उत्तम वाणी, सौंदर्य, सुकुमारता तथा सौभाग्य की प्राप्ति होती है । प्रसूति के बाद माताओं को यह पाक देने से योनि-शैथिल्य दूर होता है, दूध खुलकर आता है । इसके सेवन से ८० प्रकार के वातरोग, ४० प्रकार के पित्तरोग, २० प्रकार के कफरोग, ८ प्रकार के ज्वर, १८ प्रकार के मूत्ररोग, ३४ प्रकार के नासिका रोग एवं नेत्ररोग, कर्णरोग, मुखरोग, मस्तिष्क के रोग, बस्तिशूल व योनिशूल नष्ट हो जाते हैं । सर्दियों में इस दैवी पाक का विधिवत् सेवन कर सभी नीरोगता और दीर्घायुष्य की प्राप्ति कर सकते हैं । इसका सेवन 'वसंत पंचमी' तक किया जा सकता है । इसका मात्र एक दिन सेवन करने से पूज्य बापूजी को इसकी गुणवत्ता का अनुभव हुआ और उन्होंने इसे प्रभावशाली घोषित किया । (अपने घर में बना सकते हैं अथवा आश्रम व समिति के सेवाकेन्द्रों से भी प्राप्त कर सकते हैं ।)

पुनर्नवा अर्क
जो बनाये आपके शरीर को नया

शरीरं पुनर्नवं करोति इति पुनर्नवा ।

अपने रक्तवर्धक व रसायन गुणों से शरीर को पुनः नयापन अर्थात् यौवन प्रदान करती है इसलिए इसे पुनर्नवा कहा जाता है । यह कोशिकाओं में संचित मलों को मूत्र के द्वारा बाहर निकालकर सम्पूर्ण शरीर की शुद्धि करती है, जिससे किडनी, लीवर, हृदय आदि सभी अंग-प्रत्यंगों की कार्यशीलता व मजबूती बढ़ती है तथा युवावस्था दीर्घ काल तक बनी रहती है।

पुनर्नवा पंचांग का तुलसी व इलायची से निर्मित यह अर्क रोगनिवारक होने के साथ-साथ उत्तम रसायन भी है। इसके सेवन से भूख खुलकर लगती है । मल-मूत्र साफ आता है । रक्त की वृद्धि होती है । यह हृदय की क्रियाशीलता को बढ़ाकर रक्तदाब में वृद्धि करता है । पुनर्नवा उत्तम विषनाशक भी है । विरुद्ध आहार तथा अंग्रेजी दवाइयों के अधिक सेवन से उत्पन्न विष इसके सेवन से नष्ट हो जाते हैं। शोथ (शरीर के किसी भी अंग पर अथवा सम्पूर्ण शरीर पर आनेवाली सूजन) की यह सर्वश्रेष्ठ औषधि है ।

यह अर्क किडनी व लीवर के सभी विकार, उदररोग, पांडु (रक्ताल्पता), पीलिया, जलोदर (ASCITIS), श्वास, खाँसी, मधुमेह (डायबिटीज), संक्रामक व विषजन्य रोग, उपदंश, स्त्रीरोग, त्वचाविकार, आमवात, संधिवात, किडनी व पित्ताशय की पथरी, प्लीहावृद्धि, भगंदर, बवासीर, हाथीपाँव तथा विभिन्न हृदयरोगों व नेत्रविकारों में बहुत लाभदायी है।

सेवन विधि : २० से ५० मि.लि. अर्क आधी कटोरी पानी में मिलाकर दिन में एक या दो बार लें। इसके सेवन के बाद एक घंटे तक कुछ न लें।

रुग्ण तथा स्वस्थ सभी व्यक्ति इसका उपयोग कर सकते हैं।

मिली बीमारी से मुक्ति और प्रमोशन की युक्ति

डॉक्टर द्वारा मुझे हलका हार्टअटैक आया बताने पर मैं आगरा में आई.सी.यू. में भर्ती हो गया और ३९ दिन की छुट्टी लेनी पड़ी, जिसके कारण मैं हाईकोर्ट द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार वार्षिक कार्य नहीं कर पाया । तत्कालीन जिला जज ने असंतुष्ट होकर मेरी गोपनीय चरित्रावली खराब कर दी और मैं मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट से अतिरिक्त जिला न्यायाधीश के पद पर पदोन्नति से वंचित हो गया । मेरे एक भाई की हार्ट अटैक से मृत्यु हो चुकी है, जबकि २ अन्य भाइयों की बाईपास सर्जरी हो चुकी है । उक्त परिस्थितियों में मैं मानसिक रूप से बहुत परेशान हो गया था । उसके कुछ समय बाद से मैं रोज प्रातः टी.वी. पर पूज्य गुरुदेव के प्रवचन सुनने लगा। वर्ष २००० में मैंने गुरुपूर्णिमा महोत्सव पर भोपाल आकर दीक्षा ली ।

डॉक्टरों ने मेरे पारिवारिक इतिहास को देखते हुए मुझे एन्जियोग्राफी कराने की सलाह दी किंतु मैं ऑपरेशन के नाम से ही भयभीत था। पूज्य गुरुदेव भी हृदयरोग के लिए सर्जरी के बदले अन्य उपचार समय-समय पर बताते रहते हैं इसलिए मैं बाईपास सर्जरी नहीं कराना चाहता था। 'एस्कार्ट हॉस्पीटल, दिल्ली' के ऑपरेशन थियेटर में एन्जियोग्राफी के समय मैंने मन-ही-मन सद्गुरुदेव को पुकारा और ऑपरेशन टालने की प्रार्थना की क्योंकि मुझे विश्वास था कि मुझे भी हृदयरोग है। जब एन्जियोग्राफी की रिपोर्ट आयी तो एक आर्टरी में मात्र २०% रुकावट निकली, जो ४५ वर्षीय व्यक्ति के लिए सामान्य बात है । सद्गुरुदेव की कृपा से मेरा ऑपरेशन टल गया । मेरा रुका हुआ प्रमोशन भी अप्रत्याशित रूप से पूज्य गुरुदेव ने करवा दिया क्योंकि गुरुदेव की अमृतवाणी ने मुझमें इतना आत्मविश्वास भर दिया कि फिर मैंने अपना न्यायिक कार्य 'बहुत अच्छी' श्रेणी का करके दिखाया। मुझे दो अच्छी 'गोपनीय चरित्रावली' की आवश्यकता थी और जो प्रमोशन मीटिंग १ वर्ष पहले होनेवाली थी, वह गुरुदेव की कृपा से टल गयी । अतः जब मीटिंग हुई तब तक मुझे दो अच्छी 'सी.आर.' मिल चुकी थी । इस प्रकार पूज्य गुरुदेव में आस्था रखने के कारण मुझे न केवल बीमारी से मुक्ति मिली बल्कि प्रमोशन के नुकसान की भी भरपाई हो गयी ।

परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से अब मन शांत रहता है और सांसारिक हानि-लाभ ज्यादा प्रभावित नहीं करते हैं । सद्गुरुदेव की कृपा का मैं सदैव ऋणी रहूँगा ।

- के.पी. सिंह
(अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश)
सोनकच्छ जि. देवास (म.प्र.).

...पाकर सद्गुरु संग

जीवन की धारा मुड़े, पाकर सद्गुरु संग ।
कलुषित मन निर्मल बने, पुलकित हो हर अंग ॥
पंच तत्त्व के भूत का, क्या करता अभिमान ।
जिसके दम पर ये चले, उसको ले पहचान ॥
मन सम कोई मीत नहीं, मन सम बैरी नाय ।
अगर राम में रम गया, तो दे ब्रह्म बनाय ॥
सुख दुःख में जो सम रहे, प्रभु से करता प्यार ।
बाल न बाँका करि सके, उसका ये संसार ॥
पर सेवा सम पुण्य नहीं, पर पीड़ा सम पाप ।
जो पर हित पीड़ा सहे, उसे न व्यापे ताप ॥
दोष पराये सब लखें, सद्गुण लखे न कोय ।
जो केवल सद्गुण लखे, दीनबन्धु सम होय ॥
धन अनीति का मत गहो, खुद को लेउ बचाय ।
धरा यहीं रह जात धन, व्यर्थ ही पाप चढ़ाय ॥

– के.पी. सिंह

संस्था समाचार

२२ सितम्बर को हरिद्वार (उत्तरांचल) से अंबाला की ओर प्रस्थान करते हुए शेरपुर, बूढ़ाखेड़ा, सहारनपुर व हेमादरा के आश्रमों में परम पूज्य बापूजी का पदार्पण हुआ । १० वर्षों के दीर्घ अंतराल के बाद २३ व २४ सितम्बर को **अंबाला (हरि.)** में सत्संग संपन्न हुआ ।

आसोज सुद दो दिवस, संवत बीस इक्कीस ।
मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस ॥

आसोज सुद दो दिवस (आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया) का दिन पूज्य बापूजी के कृपापात्र शिष्यों के लिए वह पावन दिन है, जो हर वर्ष उन्हें अपने परम लक्ष्य की याद दिला जाता है । इसी दिन दोपहर ढाई बजे पूज्यश्री को ब्रह्मलीन सद्गुरु ब्रह्मनिष्ठ स्वामी लीलाशाहजी बापू की कृपा से आत्मसाक्षात्कार हुआ था ।

इस पावन दिवस पर पूज्यश्री के पावन सान्निध्य व दर्शन-सत्संग का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ अंबालावासियों को । शारदीय नवरात्रि के इन दिनों में आत्मीयता से परिपूर्ण अपनी आत्मस्पर्शी अमृतवाणी में परम पूज्य बापूजी ने दुःखों का अन्त करने की कुंजी बतायी । ब्रह्मवेत्ता पूज्यश्री ने बताया : ''अपने चेतन स्वभाव को आपने नहीं जाना, नहीं पाया तब तक कितना भी धन पा लो, सत्ता पा लो, सौन्दर्य पा लो, स्वर्ग तो क्या स्वर्ग का राजपद भी पा लो, ब्रह्मलोक का पद भी पा लो परंतु **क्षीणे पुण्यं मर्त्यलोकं विशन्ति ।** पुण्यनाश होने पर फिर पतन... लेकिन अपने-आपको पा लोगे तो न पतन है न उत्थान, कुछ बाकी नहीं रह जाता है। न सुख तुमको प्रभावित करेगा, न दुःख तुमको दबायेगा । तुम दोनों के सिर पर पैर रखते हुए थनगनाते, नाचते, खेलते, हँसते अपने परम पद का अनुभव करोगे । इसको बोलते हैं ब्रह्मज्ञान। भगवान के दर्शन हो जायें तभी भी दुःखों का अंत नहीं होनेवाला, पक्का लिख लो लेकिन भगवान की बात मानने के बाद दुःख टिकेगा नहीं, मेरे लाला ! मेरी लालियाँ !''

अंबाला में अपनी अमृतवाणी की रसधार बहाकर पूज्यश्री २५ सितम्बर को **पटियाला (पंजाब)** पहुँचे, जहाँ २६ सितम्बर का एक दिन दर्शन-सत्संग के लिए नियत था । सत्संग के दौरान पूज्यश्री नाभारोड स्थित ग्राम कल्याण में नवनिर्मित आश्रम में रुके और अपने आध्यात्मिक स्पंदनों से उस भूमि को पावन किया । इससे पहले यहाँ के कृपापात्र शिष्यवृंद हर गुरुवार व पूर्णिमा पर चंडीगढ़, लुधियाना, अमृतसर या जालंधर स्थित आश्रमों में जाते थे ।

शास्त्रों से विमुख हो रहे इंसान को सही राह दिखाते हुए भारतीय संस्कृति की मस्तक पर तिलक लगाने की लुप्त होती परंपरा को पुनर्जीवित करते हुए पूज्य बापूजी ने बताया : ''तिलक करने से सौन्दर्य, तेज, सूझबूझ तो बढ़ती ही है, साथ में शरीर के पाँचों केन्द्रों का राजा छठा केन्द्र भ्रूमध्य में स्थित आज्ञा चक्र लोक-परलोक सँवारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है । प्लास्टिक की बिंदियों

की अपेक्षा चंदन, सिंदूर, कुमकुम, तुलसी की जड़ की मिट्टी व देशी गाय के खुर की मिट्टी विशेष लाभदायी है ।''

पूज्यश्री ने नवरात्रि के दिनों में व्रत-उपवास की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया : ''जो लोग पूरे ९ दिन व्रत नहीं रख सकते वे सप्तमी से नवमी तक व्रत अवश्य रखें।''

पटियाला के बाद अगले ही दिन २७ सितम्बर को पूज्यश्री ने **संगरूर (पंजाब)** में भगवन्नाम माहात्म्य का सूक्ष्म एवं सरल निरूपण करते हुए कहा : ''कई प्रकार के खनिज होते हैं, कई प्रकार के रत्न होते हैं, कई प्रकार के सुख और सुविधाएँ होती हैं, कई प्रकार की सफलताएँ होती हैं, कई प्रकार की धातुएँ होती हैं लेकिन यह सब भगवन्नाम की कमाई के आगे बहुत तुच्छ हैं ।''

३० सितम्बर से २ अक्टूबर तक ऐतिहासिक भूमि **कुरुक्षेत्र (हरि.)** में ब्रह्मसरोवर के पूर्वी तट पर त्रिदिवसीय ध्यानयोग शिविर संपन्न हुआ । इन दिनों समस्त कुरुक्षेत्र बापूमय नजर आया ।

संसार के सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपयोगी ग्रंथ 'श्रीमद्भगवद् गीता' की जन्मस्थली कुरुक्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बताते हुए गीतामर्मज्ञ पूज्यश्री ने कहा : ''राजा कुरु कौरवों-पांडवों के पूर्वज थे । उनके नाम से इस इलाके का नाम कुरुक्षेत्र पड़ा । महाभारत युद्ध से पहले भी कुरुक्षेत्र नाम प्रचलित था । राजा कुरु से पूर्व इस पवित्र स्थान का नाम ब्रह्मक्षेत्र, भृगुक्षेत्र, आर्यावर्त, सामन्त पचंक आदि था ।

महर्षि वेदव्यासजी द्वारा 'महाभारत' तथा आदिपुरुष मनु द्वारा 'मनुस्मृति' की रचना यहाँ हुई । महर्षि वसिष्ठ व विश्वामित्रजी को ब्रह्मज्ञान में विशेष निष्ठा इसी क्षेत्र में हुई थी । सूर्यग्रहण के अवसर पर स्नान-दानार्थ भगवान श्रीकृष्ण, बलरामजी, वसुदेवजी व उग्रसेन भी आये थे ।

भगवान श्री रामचंद्रजी सीताजी एवं समस्त भ्राताओं के साथ पुष्पक विमान से सूर्यग्रहण के समय यहाँ आये थे।''

इस पुनीत ऐतिहासिक भूमि के प्रति लोगों को, राज्य एवं केन्द्र शासन को सजग करते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''हरियाणा सरकार को, केन्द्र सरकार को हमारी अपील है कि उन्हें इस तीर्थभूमि में कभी भी आय की मति न बनाकर यहाँ अपने धनकोष का सदुपयोग करते हुए तीर्थभूमि की गरिमा बनी रहे ऐसा यत्न करना चाहिए । देशवासियों को अशांति और एड्स की बीमारी से बचाना है तो इस तीर्थक्षेत्र में सत्संग के आयोजन होते रहें, यज्ञ-याग, जप-तप होते रहें । उसमें राज्य शासन का भी धन लगे और केन्द्र शासन का भी धन लगे । इससे राज्य में भी बरकत आयेगी और केन्द्र में भी बरकत आयेगी । यहाँ से कमाई करने की दुर्बुद्धि राज्य को भी न आये और केन्द्र को भी न आये । अभी तो सद्बुद्धि भगवान दे रहे हैं वही बनी रहे, बढ़ती रहे ।''

पूर्णिमा दर्शन व्रतधारी भक्तों के अर्थ-श्रम की बचत हो इस उद्देश्य से पूज्य बापूजी अपने शरीर के कष्ट की परवाह न करते हुए अलग-अलग जगहों पर पूर्णिमा दर्शन कार्यक्रम देते हैं। इस माह का पूर्णिमा दर्शन कार्यक्रम ५ व ६ अक्टूबर की सुबह तक अमदावाद व ६ से ८ अक्टूबर तक द्वारका (दिल्ली) में सम्पन्न हुआ।

शरद पूर्णिमा की रात जो अलौकिक आत्म-अमृत भगवान श्रीकृष्ण ने बंसी के स्वर में घोलकर गोपियों को पिलाया था, उसी परम अमृत का आस्वादन भक्तों ने पुण्यसलिला साबरमती के तट पर पूज्य बापूजी के सान्निध्य में किया; अंतर सिर्फ इतना था कि भगवान श्रीकृष्ण ने वह दिव्य आत्म-अमृत रात में पिलाया था और पूज्य बापूजी रात-दिन, सुबह-शाम पिलाते रहते हैं । संतकृपा की यह अहैतुकी वर्षा हर किसीके चित्त को शीतल कर देती है, हर हृदय की तपन मिटा देती है, हर किसीके मन को आह्लादित-आनंदित कर देती है। पूज्य बापूजी ने बताया : ''इस रात्रि को चन्द्रमा अपनी पूर्ण कलाओं के साथ पृथ्वी पर शीतलता, पोषक शक्ति एवं शांतिरूपी अमृतवर्षा करता है । इससे चित्त को शांति मिलती है, पित्तप्रकोप के शमन और निरोगता में मदद मिलती है। इस महत्त्वपूर्ण रात्रि को चाँदनी का सेवन करें, १०-१५ मिनट चाँद को एकटक देखें।''

सत्संग सरिता बहाते हुए पूज्य बापूजी ने कहा :

संस्था समाचार

''वर्तमान में टी.वी. चैनलें, अनुचित खान-पान और विकार बढ़ रहे हैं इसलिए महँगाई, दुःख और शोषण भी बढ़ रहा है। पुण्य बढ़ेगा तो लोगों का दुःख कम होगा। दिल्ली में चल रहे वातानुकूलित (A.C.) मैट्रो रेलवे को वातानुकूलित रहित (without A.C.) किये जाने पर जोर देते हुए पूज्यश्री ने कहा : ''इससे टिकट किराया तो कम होगा ही, साथ ही बार-बार तापमान बदलने से होनेवाली हानि से बचाव होगा।''

लोक कल्याण में रत लोकलाड़ले संतश्री ने शताब्दी व राजधानी गाड़ियों में रात्रि भोजन में दिये जानेवाले दही को हानिकारक बताते हुए कहा : ''रात्रि का दही सेवन कफवर्धक है व बुद्धि को मंद करता है। भूलकर भी रात्रि को दही का सेवन नहीं करना चाहिए। सतर्क समाज रेलवे विभाग को भी सतर्क करने की सेवा करे।''

१४-१५ अक्टूबर को झीलों की नगरी, त्याग व शौर्य की भूमि मेवाड़ की धरा **उदयपुर (राज.)** में सत्संग सम्पन्न हुआ। भगवान श्री विष्णु की योगनिद्रा काल-चतुर्मास के अंतिम चरण व कार्तिक माह के पावन दिनों में ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरुदेव का सत्संग-सान्निध्य पाकर मेवाड़ क्षेत्र के श्रद्धालु झूम उठे।

सत्संग समारोह की पूर्व संध्या पर श्री सुरेशानंदजी के नेतृत्व में भव्य हरिनाम संकीर्तन यात्रा निकाली गयी। इसमें सबसे आगे 'ॐ' के ध्वज लिये नौनिहाल चल रहे थे, उसके पीछे सत्साहित्य रथ, तत्पश्चात् सजे-धजे हाथी पर मनोहर छतरी के नीचे हृदयसम्राट पूज्य बापूजी की मनमोहन छवि। इसके अतिरिक्त ब्रह्मलीन ब्रह्मनिष्ठ स्वामी लीलाशाहजी बापू की पालकी व अन्य आकर्षक मंदिर शोभायात्रा में आकर्षण के केन्द्र रहे। भव्य सजावट से युक्त शोभायात्रा में श्री सुरेशानंदजी ने भक्तिमय मधुर स्वर लहरी प्रवाहित कर भक्तों को झूमने पर मजबूर कर दिया।

नगर के विभिन्न मार्गों को हरिनाम संकीर्तन से पावन करती यह शोभायात्रा जहाँ-जहाँ गयी श्रद्धालुओं ने आरती व जय-जयकार से स्वागत किया।

१० सितम्बर २००६ को विद्यार्थियों के लिए 'युवाधन सुरक्षा ज्ञान प्रतियोगिता' का आयोजन बाल संस्कार की स्थानीय इकाई द्वारा किया गया था। इसमें क्षेत्र के १०८ गाँवों के २६४३ विद्यार्थी सम्मलित हुए। १५ अक्टूबर को पूज्यश्री के करकमलों से विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

पूज्य बापूजी की दिवाली, होती है सबसे निराली

स्वामी विवेकानंदजी ने कहा था कि 'भूखे व्यक्ति के लिए रोटी ही अध्यात्म है, अन्न ही भगवान है और वस्त्र ही परमात्मा है।'

दीन-दुःखियों, गरीबों एवं आदिवासियों के कष्टों को देखकर कृपासिंधु पूज्य बापूजी का हृदय उनके प्रति करुणा से पसीज उठता है और वे दीपावली एवं अन्य अवसरों पर उन क्षेत्रों में भंडारों का आयोजन करते हैं। कई भंडारों में वे स्वयं रहते हैं। वैसे आश्रम द्वारा दीपावली पर्व पर देश भर में अनेक स्थानों पर भंडारों का आयोजन हुआ परंतु १६ अक्टूबर को **गोगुन्दा (गुज.)**, १७ अक्टूबर को कोटड़ा व **लांबड़िया (गुज.)**, २० अक्टूबर को पेठमाला, २१ अक्टूबर को **हिम्मतनगर (गुज.)** में आयोजित भंडारों में पूज्य बापूजी की पावन उपस्थिति, दर्शन-सत्संग व मार्गदर्शन का भी लाभ गरीब-गुरबों को मिला।

इन भंडारों में वितरण हेतु अन्न, वस्त्र, बर्तन, कंबल व अन्य जीवनोपयोगी सामग्री तथा नकद आर्थिक सहायता के वितरण का प्रबंध किया गया था। आश्रम के साधक भाई-बहनों द्वारा करीब ४७ गाँवों में घर-घर जाकर आदिवासियों को भंडारे हेतु आमंत्रित किया गया।

भंडारा-स्थल पर पूज्यश्री का आगमन होते ही एक खुशी की लहर दौड़ जाती। सभी लोग 'हरि ॐ... हरि ॐ...' के पावन कीर्तन में झूमने लग जाते।

पूज्यश्री उन्हें स्वस्थ रहने की कुंजियाँ व सरल यौगिक प्रयोग सिखाते, व्यसनों से होनेवाली हानियों से

अवगत कराते तथा व्यसन छोड़ने का संकल्प करवाते । सभीको चावल आदि अन्न, वस्त्र, टोपी, बर्तन, कंबल, मिठाई, खजूर, तेल, साबुन, मोमबत्ती, माचिस आदि जीवनोपयोगी चीजें बाँटी जातीं। बाद में सभीको नकद दक्षिणा भी दी जाती। फिर भोजन-प्रसाद का वितरण होता था, यह क्रम अभी तक चल रहा है ।

वाराणसी के पास मिर्जापुर व उसके निकटस्थ आदिवासी क्षेत्र रतैया चौराहा, हलिया, घोरावल, पतेहरा, जमुई, लालगंज, पीपरा-इन क्षेत्रों में रात्रि को विडियो प्रोजेक्टर द्वारा सत्संग, दिन को भंडारा व आश्रम के वक्ताओं का सत्संग जारी है । गुजरात में 'भक्ति जागृति यात्रा' के छः रथ निकले छः दिशाओं में ।

बापूनगर (अमदावाद) में २२ अक्टूबर की शाम गरीब परिवारों को दीपावली के निमित्त मिठाई, पटाखे, मोमबत्ती, तेल, बर्तन, ओजस्वी आयुर्वैदिक चाय, ब्रह्मचर्यरक्षक बूटी आदि विभिन्न वस्तुएँ व आर्थिक सहायता प्रदान की गयी । ५००० से अधिक परिवार इस सेवाकार्य से लाभान्वित हुए ।

मनाती है दुनिया सारी, मंगल पर्व दिवाली ।
पर बापूजी की दिवाली, होती है सबसे निराली ॥
जिन घरों में नहीं हैं खुश दिल, तेल और बाती ।
बापूजी की करुणा-कृपा, वहाँ बरस जाती ॥
जो बेसहारा, निराश्रित और हैं निर्धन जन ।
वहाँ पहुँच जाते बापू, जैसे वे उनके हैं स्वजन ॥
भण्डारों का करके, विशाल आयोजन ।
वितरण करते अन्न, धन, वस्त्र और बर्तन ॥
जरूरतमंद पाते बापूजी से, रहने को मकान ।
वस्त्र, बर्तन, मिठाई के साथ, देते मधुर मुस्कान ॥
दीन-हीन न मानें उन्हें, देखें उनमें नारायण ।
सुनाते हैं बापूजी उन्हें गीता, भागवत, रामायण ॥

पूज्यश्री ने उपस्थित गरीब-गुरबों को भगवन्नाम संकीर्तन में झुमाते हुए कहा :

''आदिवासी लोग भले ही गरीब हों पर हृदय में भक्ति का धन बढ़ाकर धनवान हो सकते हैं ।''

गरीब-गुरबों के रूप में साक्षात् नारायण ही हमें सेवा का अवसर दे रहे हैं - यह पूज्य बापूजी की शिक्षा इन भंडारों में प्रकट रूप लेती दिखायी पड़ती है । भंडारे की पूर्णाहुति के क्षणों में वे अभावग्रस्त गरीब-गुरबे, आदिवासी लौट जाते थे अपने-अपने घर, सिर पर प्रसादस्वरूप मिली वस्तुओं की गठरी, दिल में भगवद्ज्ञान की मिठास एवं मुख पर खुशी की मुस्कान लिये... मानों कह रहे हों-

दीपावली के शुभ अवसर पर, पाया आनंद और उल्लास।
बापूजी के मधुर प्रसाद से, हुआ उदर-तृप्ति एहसास॥
दिल में जगी है नयी उमंग, ज्यों सूरज उगे प्रभात।
मिला है जबसे हमें आपका, प्यार-करुणा का हाथ॥

२१-२२ अक्टूबर को दीपावली का पावन दिन इस वर्ष **हिम्मतनगर (गुज.)** के नाम रहा तो नूतन वर्ष की प्रभात पर परम पूज्य बापूजी का दर्शन-सत्संग **अमदावाद आश्रम** में हुआ । हर दिन को खुशहाल बनाने की कला बताते हुए पूज्यश्री ने रोज सुबह भगवन्नाम स्मरण-कीर्तन करते हुए कमरा बंद कर ५ मिनट नृत्य करने की प्रेरणा दी ।

यहाँ नूतन वर्ष का प्रारंभ ध्यान, कीर्तन, नृत्य व सत्संग से हुआ तो अंत रंगारंग कार्यक्रम के द्वारा, हास्य-विनोद, आनंद-उल्लास से । नूतन वर्ष की वेला में श्रद्धालुओं को पुण्यमय वस्तुओं के दर्शन हों, इस उद्देश्य से आश्रम के प्रवेश द्वार के निकट गौमाता, गौघृत, स्वर्ण, रजत, शंख, तुलसी, चंदन, सद्ग्रंथ, मंगल कलश आदि रखे गये थे ।

1 November 2006
RNP.NO. GAMC 1132/2006-08
Licenced to Post without Pre-Payment
LIC NO. GUJ-207/2006-08.
RNI NO.48873/91.
DL (C)-01/1130/2006-08.
WPP LIC NO. U (C)-232/2006-08.
G2/MH/MR-NW-57/2006-08
WPP LIC NO. NW-9/2006

पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार दिवस पर निकाली संकीर्तन यात्राएँ

बारां (राज.) सरकी लिमड़ी, जि. साबरकांठा (गुज.)

अहमदपूर, जि. लातूर (महा.) पटना (बिहार)

वाराणसी (उ.प्र.) हापुड़ (उ.प्र.)

यवतमाल (महा.) में अनाज, वस्त्र, सत्साहित्य वितरण एवं व्यसनमुक्ति अभियान तथा बोईसर जि. थाने (महा.) में अनाज-वितरण ।